260

जैन धर्म

मुख्य तत्त्व चिन्तामणि

लेखक
श्री श्री १००८ भारत केसरी श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री
शाराम जी महाराज के सुशिष्य पञ्जाब प्रान्त मन्त्री, जैन
म,प्रसिद्ध वक्ता पण्डित रत्न शांत सरल स्वभावी श्री
श्रा १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज

प्रकाशक
ला० मुनालाल जी
मालिक फर्म ला० मानामल संतीराम जैन
अम्बाला शहर।

प्रथमावृत्ति] विक्रमी सं० २०१० [मूल्य ॥=)

❋ निवेदन ❋

इस असार संसार में अनेक प्राणी उत्पन्न होते हैं। और अपनी आयुष्य पूर्ण करके परलोक की राह ले जाते हैं। नाम केवल उन्हीं पुरुषों का रहता है जो श्रेष्ठ काम कर जाते हैं। वही पुरुष श्रेष्ठ कहलाते हैं। धर्म परायण होते हैं।

इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण विक्रम सम्वत् २ ०६ में मैंने अपने पूज्य भाई श्री खरैतीराम जी की पुण्य स्मृति में प्रकाशित किया था। पुस्तक समाप्त हुई को काफी समय हो चुका है। परन्तु इसकी मांग अत्यधिक होने के कारण तृतीय संस्करण प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस लिये आवश्यक प्रतीत होता है कि उनके परिवार के विषय में भी कुछ परिचय दिया जावे। भाई खरैतीराम जी पाँच पुत्रियां और दो पुत्र छोड़ गए थे। जिनके पालन पोषण का भार मेरे और उनकी पत्नी पर निर्भर था। दो पुत्रियों की शादी तो वह अपनी मौजूदगी में ही कर गए थे। जिन का नाम विमला देवी व मिसला देवी है। इनके पश्चात तीसरी लड़की निर्मला देवी का विवाह बरनाला शहर में हकीम चानणशाह के पौत्र हकीम श्री शिवदास जी के सुपुत्र डाक्टर प्रीतम कुमार जी के साथ हुआ और चौथी लड़की सन्तोष कुमारी का विवाह मुज्जरवाल जिला लुधियाना में लाला बख्शीराम जी के सुपुत्र श्री प्यारे लाल जी B A B T के साथ कर दिया गया। और पाँचवी पुत्री विनोद बाला दसवी श्रेणी में अध्ययन कर रही है।

दो पुत्रों में बड़े का नाम जिनदास है जिसका विवाह मलौधह

दुबाबा में लाला हर गोपालमल की पोत्री लाला जगदीशराय की सुपुत्री सुदर्शना कुमारी के साथ हुआ। और छोटे पुत्र प्रेमराज का विवाह होशयारपुर शहर में लाला मोती राम जी सर्राफ की सुपुत्री लीलावती के साथ हुआ।

इस वर्ष अम्बाले शहर में हमारे पुण्योदय से श्री श्री १००८ परम प्रतापी महा भाग्यवान शान्त मुद्रा सरल स्वभावी प्रातः स्मरणीय पंजाब प्रांत मन्त्री कवि रत्न पण्डितश्री शुक्लचन्द्र जी महाराज प्रसिद्ध वक्ता श्री सुरेन्द्र मुनि जी महाराज मनोहर व्याख्यानी श्री हरिश्चन्द्र जी महाराज (केशारी शिष्य) आदि ठाने १० का चातु मास हुआ।

और इसी चातुर्मास में शुभदिन ज्येष्ट सुदी पूर्णमाशी और श्रावण कृष्णा द्वादशी के दिन दोनो लड़कों के दो पुत्र उत्पन्न हुए।

प्रथम तो महाराज श्री जी का हमारे क्षेत्र में चातुर्मास होना दूसरा इसी चातुर्मास में दो पुत्रों की प्राप्ति होने के कारण मेरीआत्मा ने तृतीय संस्करण प्रकाशित करने के लिये उत्साहित किया इसी कारण यह पुस्तक आपके कर कमलों तक पहुंच रही है।

पिछला संस्करण मे बहुत सी अशुद्धियां असावधानी के कारण रह गई थी इस कारण इस बार इसका पर्फ श्री सन्तोष मुनि जी महाराज ने बड़े परिश्रम से देखा है और बहुत सी अशुद्धियां निकाल दी है। जिसके लिये हम आभारी हैं। अन्त में मैं आशा करता हू कि इस पुस्तक से धर्म प्रेमी सज्जन अवश्य लाभ उठायेंगे।

निवेदक
मुनीलाल जैन

समर्पण

मनोरमा जैन

भूमिका

बालक का हृदय सरल और कोमल होता है। उसमें जिस प्रकार की संस्कार शक्तियां भर दी जाएगी। उसी के आधार पर वह अपना *जीवन व्यतीत करता है।*

अगर यह परम सत्य है। और आप इसकी यथार्थता को स्वीकार करते हैं तो विश्व क भावी कर्णधारों और धर्म के भावी सैनिकों में सत्य धर्म रूपी संस्कार डालने का प्रयत्न कीजिये।

धर्मोपदेश करते हुए निष्ठुर तथा कठोर साधना रूपी दुर्गम पथ पर पैदल पर्यटन कर जैन मुनियों ने रचनाओं की परम्परा को उभाप्त होने से बचाया है। यही कारण है कि हमें सर्वविश्व के प्रत्येक प्रान्त में प्रत्येक विषय का विपुल साहित्य मिलता है।

जैन धर्म साम्प्रदायिक धर्म नहीं है। विश्व के अनेक धर्म कहां स्थिर हैं किस लिए उत्पन्न हुए हैं और उनका अन्तिम उद्देश्य क्या है ? यह सब बातें तटस्थ भाव से विचारना तथा अनेकान्त दृष्टि से उनकी तुलना करना इसी में ज्ञान और जैन दर्शन का महत्त्व है।

इसी पाठ्य क्रम को हमने मुख्य रूप से लक्ष्य रखते हुए सहज पुस्तक का प्रतिपादन किया है।

मानव के जीवन मे ज्ञान दर्शन का होना अति अनिवार्य है। तभी वह अपने जीवन की नैया को इस भव सागर से पार कर सकता है।

इस आधुनिक युग में मानव पिपासित मृग की भांति सुख शान्ति की खोज में निर्जन कानन प्रबल घटवियों में भटक रहा है। वह इन भौतिक वस्तुओं में ही सच्चे सुख का अनुभव करता है परन्तु यह मान्य योग्य नहीं।

क्योंकि यह सुख क्षण भंगुर है। नाशवान है। नश्वर है। यह आत्मा सच्चे आनन्द से ही सन्तुष्ट होती है परन्तु वह सच्चा आनन्द अपने ही अन्दर है। केवल ज्ञान न होने से दिखाई नहीं पड़ता।

इस पुस्तक में इसी ज्ञान का महत्त्व बताया गया है कि किस प्रकार मानव ज्ञान रूपी प्रकाश से अपने सच्चे आनन्द की झांकी देख सकता है। क्योंकि ज्ञान से तप, जप त्याग संयम की भावना जाग्रत होगी और इसी भावना से सच्चे आनन्द का अनुभव होगा। तथा इसी के आश्रय मानवतस अजर अमर निराकार सच्चिदानन्द स्वरूप अरूपी भगवान् के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

यह जैन धर्म शास्त्र रूपी कोष केवल जैन समाज के लिए ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी और लाभ प्रद है। परन्तु मेरी दृष्टि में तो अपनी समाज जाति राष्ट्र तथा विश्व का हित तभी हो सकता है जब हम इसका प्रचार करें तथा लिखी बातों को जीवन में उतारें।

शांत सरल स्वभावी प्रातः स्मरणीय श्रमण संघीय पंजाब प्रान्त मन्त्री जैन समाज भूषण प्रसिद्ध वक्ता प्रकाण्ड विद्वान साहित्य प्रेमी कवि रत्न प० श्री श्री श्री १० ८ श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज ने अपना अमूल्य समय निकाल कर इस पुस्तक का प्रतिपादन किया।

आपने गुजरात बम्बई प्रांत महाराष्ट्र उत्तर प्रदेश काठिया वाड़ राज्य स्थान पंजाब प्रान्त तथा दक्षिण के सभी देशों का प्रथम भ्रमण किया और विपुल जैन हिन्दी साहित्य का अध्ययन किया।

इसमें पच्चीस बोल नवतत्व छब्बीसद्वार देवलोक का श्वासोश्वास द्वार तथा जैन धर्म से सम्बन्धित अन्य बातों का लिखा है। लोक भाषा है। जिसको बालक भी सुविधा से अध्ययन कर सकता है।

मैंने प्रारम्भ से अन्तिम तक इस पुस्तक को पढ़ा और स्मरण किया। जो धर्म तत्त्वदर्शियों का प्रतिपादन किया हुआ है वही इसी में व्याप्त है। ज्ञान त्याग तप जाप दयम संयम चारित्र आदि पर ही अधिक प्रकाश डाला गया है।

मेरी दृष्टि में इस पुस्तक को वह स्थान प्राप्त है जो गगन में प्रथम नक्षत्र को हार में प्रथम मोती को तथा उपवन में प्रथम सुमन को है।

वास्तव में इसका संस्करण दो बार इससे पूर्व हो चुका है। जो हाथोंहाथ बिक गई। अब जनता की अधिक माँग होने के कारण श्रीमान् धर्म प्रेमी ला० मुनी लाल जी तृतीय बार इस का प्रकाशन करवा रहे हैं।

परुफ का कई बार संशोधन किया गया है हो सकता है कोई त्रुटि रह गई हो। अतः बुद्धिमान जन तनिक सावधानी से पढ़ और अपने जीवन को सफल बनाएं। तभी हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

मुनि सन्तोष

पच्चीस बोल का थोकड़ा

११ गुणस्थान—चतुर्दश

१ मिथ्यात्व गुणस्थान २ सास्वादन गुणस्थान ३ मिश्र गुणस्थान ४ अव्रति सम्यग् दृष्टि गुणस्थान ५ देश विरति गुणस्थान ६ प्रमादी संयति गुणस्थान ७ अप्रमादी संयति गुणस्थान ८ नियट्टि (निवर्त्ति) बादर गुणस्थान ९ अनियट्टि (अनिवर्त्ति) बादर गुणस्थान १० सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान ११ उपशान्तमोहनीय गुणस्थान १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान १३ सयोगी केवली गुणस्थान १४ अयोगी केवली गुणस्थान।

१२ पांच इन्द्रियों के विषय—तेईस

(श्रुतेन्द्रिय के विषय ३) १ जीव शब्द २ अजीव शब्द ३ मिश्र शब्द (चक्षुरिन्द्रिय के विषय ५) १ कृष्ण २ नील ३ पीत ४ रक्त ५ श्वेत (घ्राणेन्द्रिय के विषय २) १ सुगन्ध २ दुर्गन्ध (रसेन्द्रिय के विषय ५) १ कटुक २ कषाय ३ खट्टा ४ मधु (मीठा) ५ तीक्ष्ण (स्पर्शेन्द्रिय के विषय ८) १ कर्कश २ सकोमल ३ लघु ४ गुरु ५ उष्ण ६ शीत ७ रूक्ष ८ स्निग्ध।

१३ मिथ्यात्व के भेद—दश

१ जीव को अजीव कहे तो मिथ्यात्व २ अजीव को जीव कहे तो मिथ्यात्व ३ धर्म को अधर्म कहे तो मिथ्यात्व ४ अधर्म को धर्म कहे तो मिथ्यात्व ५ साधु को असाधु कहे तो मिथ्यात्व ६ असाधु को साधु कहे तो मिथ्यात्व

६ मन बलप्राण ७ वचन बलप्राण ८ काय बलप्राण ९ श्वासोश्वास बलप्राण १० आयुष्कर्म बलप्राण।

७ तनु अर्थात् शरीर–पांच

१ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तैजस शरीर ५ कार्माण शरीर।

८ योग–पंचदश

(४ मन के) १ सत्यमनोयोग २ असत्य मनोयोग ३ मिश्रित मनोयोग ४ व्यवहार मनोयोग (४ वचन के) १ सत्य वचन २ असत्य वचन ३ मिश्रित वचन ४ व्यवहार वचन (७ काय के) १ औदारिक काययोग २ औदारिक मिश्रकाय योग ३ वैक्रियकाय योग ४ वैक्रिय मिश्रकाय योग ५ आहारिक काय योग ६ आहारिक मिश्रकाय योग ७ कार्माण काय योग।

९ उपयोग–द्वादश

(५ ज्ञान) १ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ अवधि ज्ञान ४ मनःपर्यव ज्ञान ५ केवल ज्ञान (३ अज्ञान) १ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ विभङ्ग ज्ञान (४ दर्शन) १ चक्षु दर्शन २ अचक्षु दर्शन ३ अवधि दर्शन ४ केवल दर्शन।

१० कर्म–आठ

१ ज्ञानावरणीय कर्म २ दर्शनावरणीय कर्म ३ वेदनीय कर्म ४ मोहनीय कर्म ५ आयुष्कर्म ६ नामकर्म ७ गोत्र कर्म ८ अन्तराय कर्म।

पानी पुण्य ३ लयण पुण्य ४ शयन पुण्य ५ वस्त्र पुण्य ६ मनः पुण्य ७ वचन पुण्य ८ काय पुण्य ९ नमस्कार पुण्य (नम्रता)

चतुर्थ पाप तत्त्व के १८ भेद—१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह (क्लेश) १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मृषा १८ मिथ्या दर्शन शल्य।

पांचवें आश्रव तत्त्व के २० भेद—१ मिथ्यात्वाश्रव २ अव्रताश्रव ३ प्रमादाश्रव ४ कषायाश्रव ५ योगाश्रव ६ प्राणातिपाताश्रव ७ मृषावादाश्रव ८ अदत्तादानाश्रव ९ मैथुनाश्रव १० परिग्रहाश्रव ११ श्रुतेन्द्रियाश्रव १२ चक्षु रिन्द्रियाश्रव १३ घ्राणेन्द्रियाश्रव १४ रसनेन्द्रियाश्रव १५ स्पर्शेन्द्रियाश्रव (यह पांच इन्द्रिय वश न करने से आश्रव होते हैं।) १६ मनोयोगाश्रव १७ वचनयोगाश्रव १८ काययोगाश्रव १९ भण्डोपकरण वस्त्र पात्र अयत्ना से ग्रहण करे अयत्ना से रक्खे तो आश्रव २० सूचि कुशाग्रमात्र भी पदार्थ अयत्ना से लेवे तथा देवे तो आश्रव।

छठे संवर तत्त्व के २० भेद—१ सम्यक्त्व संवर २ व्रत संवर ३ अप्रमाद संवर ४ अकषाय संवर ५ अयोग संवर ६ प्राणातिपात विरमण संवर ७ मृषावाद विरमण संवर ८ अदत्तादान विरमण संवर ९ मैथुन विर

८ मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ९ संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ९ कर्म रहित को कर्म सहित कहे तो मिथ्यात्व १० कर्म सहित को कर्म रहित कहे तो मिथ्यात्व।

१४ तत्त्व—नौ

१ जीव तत्त्व २ अजीव तत्त्व ३ पुण्य तत्त्व ४ पाप तत्त्व ५ आस्रव तत्त्व ६ संवर तत्त्व ७ निर्जरा तत्त्व ८ बन्ध तत्त्व ९ मोक्ष तत्त्व।

लघु नव तत्त्व के ११५ भेद

प्रथम जीव तत्त्व के १४ भेद—(एकेन्द्रिय के ४ भेद) १ सूक्ष्म २ बादर ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त (द्वीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (त्रीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (चतुरिन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (पचेन्द्रिय के ४ भेद) १ सन्नि पचेन्द्रिय २ असन्नि (असज्ञि) पचेन्द्रि ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त।

दूसरे अजीव तत्त्व के १४ भेद—(धर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (अधर्मास्तिकाय के ३ भेद १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (काल का एक ही भेद) एक काल द्रव्य एक १ (पुद्गल द्रव्य के ४ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश ४ परमाणु पुद्गल।

तृतीय पुण्य तत्त्व के ६ भेद—१ अन्न पुण्य २ (पान)

१७—१९ तीनों विकलेन्द्रियों के ३ दण्डक २० पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों का एक दण्डक २१ मनुष्य का एक दण्डक २२ व्यन्तर देवों का एक दण्डक २३ ज्योतिषी देवों का एक दण्डक २४ वैमानिक देवों का एक दण्डक।

१७ लेश्याएं—छः

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८ दृष्टि-तीन

१ सम्यग् दृष्टि २ मिथ्या दृष्टि ३ मिश्र दृष्टि।

१९ ध्यान-चार

१ आर्त्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

२० द्रव्य—छः

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल द्रव्य।

षट् द्रव्यों के तीस भेद

(धर्मास्तिकाय के पाँच भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूपी ५ गुण से गति लक्षण चलन गुण सहाय। उदाहरण जैसे पानी में मत्स्य (मछली)

(अधर्मास्तिकाय के ५ भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूपी ५ गुण से स्थिर गुण सहाय (स्थिति लक्षण)। उदाहरण जैसे—मुसाफिर को छाया का आधार।

मण सबर ९ परिग्रह विरमण सवर ११-१५ पाँचों इन्द्रिय वश करे तो संवर १६ मन वश करे तो सवर १७ वचन वश करे तो सवर १८ काय वश करे तो संवर १९ भण्डो पकरण यत्न से लेवे तथा देवे रक्खे तो संवर २० सूची कुशाग्र मात्र भी पदार्थ यत्न से लेवे तथा देवे तो संवर।

सातवें निर्जरा तत्त्व के १२ भेद—१ अनशन तप २ ऊणोदरी तप ३ भिक्षाचरी तप ४ रस परित्याग तप ५ कायक्लेश तप ६ प्रतिसंलीनता तप ७ प्रायश्चित्त तप ८ विनय तप ९ वैयावृत्य (वैयावच्च) तप १० स्वाध्याय तप

आठवें बन्ध तत्त्व के ४ भेद—१ प्रकृतिबन्ध २ स्थितिबन्ध ३ अनुभाग बन्ध ४ प्रदेश बन्ध।

नवमें मोक्ष तत्त्व के ४ भेद—१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ तप।

इस प्रकार छोटी (लघु) नवतत्त्व के ११५ भेद।

१५ आत्मा—आठ

१ द्रव्यात्मा २ कषायात्मा ३ योगात्मा ४ उपयोगात्मा ५ ज्ञानात्मा ६ दर्शनात्मा ७ चारित्रात्मा ८ वीर्यात्मा।

१६ दण्डक—चौबीस

१ दश भवनपति देवों के १० दण्डक ११ सात नारकियों का एक दण्डक १२-१६ पाँच स्थावरों के पाँच दण्डक

पट् दिशाओं में गमन करने का प्रमाण करे ७ पट्विंशति बोल की मर्यादा करे वा पचदश कर्मादानों का त्याग करे ८ अनर्था दण्ड का त्याग करे ९ काल के काल सामायिक करे १ संवर करे ११ पर्व में पोषधोपवास करे १२ मुनि महाराज को निर्दोप आहार देवे अतिथि संविभाग कर।

२३ साधु के पाँच महाव्रत

(प्रथम महाव्रत) १ प्राणातिपात जीव हिंसा करे नहीं। कराव नहीं। ३ करते को अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काया से। (द्वितीय महाव्रत) १ मृषावाद असत्य बोल नहीं। २ बोलावे नहीं। ३ बोलने की अनुमोदना करे नही मन वचन और काय से। (तृतीय महाव्रत) १ अदत्तादान चोरी करे नहीं। २ कराव नहीं। ३ करते को अनुमोदना करे नही। मन वचन और काय स। (चतुर्थ महाव्रत) १ मैथुन कुशील सेव नहीं। २ सेवाव नहीं ३ सेवन करते की अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काया स। (पञ्चम महाव्रत) १ परिग्रह धन आदि रख नहीं। २ रखावे नहीं। रखने को अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काया से।

२४ भग–४९

१ अङ्क एक ११ (ग्यारह) का—भांगे ९ १ (एक) करण १ (एक) योग से कहना। जैसा कि —

१ कर नही मनसा २ कर नहीं वायसा ३ कर नही

पट् दिशाओं में गमन करने का प्रमाण करे ७ पट्विंशति बोल की मर्यादा करे या पन्द्रह कर्मादानों का त्याग करे ८ अनर्था दण्ड का त्याग करे ९ काल के काल सामायिक करे १० संवर करे ११ पर्व में पोषधोपवास करे १२ मुनि महाराज को निर्दोष आहार देवे अतिथि संविभाग करे।

२३ साधु के पाँच महाव्रत

(प्रथम महाव्रत) १ प्राणातिपात जीव हिंसा करे नहीं। करावे नहीं। ३ करते को अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काया से। (द्वितीय महाव्रत) १ मृषावाद असत्य बोले नहीं। २ बोलावे नहीं। ३ बोलते को अनुमोदना करे नहीं मन वचन और काय से। (तृतीय महाव्रत) १ अदत्तादान चोरी करे नहीं। २ करावे नहीं। ३ करते को अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काय से। (चतुर्थ महाव्रत) १ मैथुन कुशील सेवे नहीं। २ सेवावे नहीं ३ सेवन करते को अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काया से। (पञ्चम महाव्रत) १ परिग्रह धन आदि रखे नहीं। २ रखावे नहीं। रखते को अनुमोदना करे नहीं। मन वचन और काया से।

२४ भंग-४९

१ अङ्क एक ११ (ग्यारह) का—आंक १ १ (एक) करण १ (एक) योग से कहना। जैसा कि —

१ करू नहीं मनसा २ करू नहीं वायसा ३ करू नहीं

कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा ५ कराऊ नहीं वायसा ६ कराऊ नहीं कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा ८ अनुमोदू नहीं वायसा ९ अनुमोदू नहीं कायसा।

२ अङ्क एक १२ बारह) का—भांगे ९। १ करण २ योग स कहना।

१ करू नहीं मनसा वायसा २ करू नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं वायसा कायसा ४ कराऊं नहीं मनसा वायसा ५ कराऊं नहीं मनसा कायसा ६ कराऊ नहीं वायसा कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा वायसा ८ अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ९ अनुमोदू नहीं वायसा कायसा।

३— अङ्क एक १३ का—भांगे ३। १ करण ३ योग से कहना।

१ करू नहीं मनसा वायसा कायसा २ कराऊ नहीं मनसा वायसा कायसा ३ अनुमोदू नहीं मनसा वायसा कायसा।

४—अङ्क एक २१ का भागे ९। दो करण एक योग से कहना। जैसे कि —

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा २ करू नहीं कराऊं नहीं वायसा ३ करू नहीं कराऊं नहीं कायसा। ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं वायसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ७ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वायसा ९ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं कायसा।

४—भङ्ग एक २२ का—भांगे ९। दो करण दो योग से कहना चाहिए।

१ करू नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा २ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा ४ करू नहीं अनुमादू नहीं मनसा वयसा ५ करू नहीं अनुमादू नहीं मनसा कायसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं वायसा कायसा ७ कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वायसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ९ कराऊ नहीं अनमोदू नहीं वायसा कायसा।

६—भङ्ग एक २१ का—भांगे ३। २ करण १ योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा २ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वायसा कायसा ३ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वायसा कायसा।

७—भङ्ग एक ११ का—भागे ३। तीन करण एक योग से कहना।

१ करू नही कराऊ नहा अनुमादू नहीं मनसा। २ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहा वायसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमादू नहीं कायसा।

८—भङ्ग एक ३२ का—भाग ३। तीन करण दो योग स कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमादू नहीं मनसा वयसा। २ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमादू नहीं मनसा कायसा करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वायसा कायसा।

९—भङ्ग एक ३३ का—भांगा १। तीन करण तीन योग से कहना।

१ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

२५ चरित्र-पांच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

नव तत्त्व वर्णन

जैसे—पुण्य पाप आश्रव बन्ध यह चार रूपी हैं। जीव, संवर, निर्जरा मोक्ष यह चार अरूपी हैं। अजीव रूपी अरूपी दोनों प्रकार का होता है।

१ जीवतत्त्व

जीव किसे कहते हैं? पुण्य पाप का कर्ता सुख दुख का भोक्ता चेतना लक्षण सहित प्राणों का धरता अविनाशी इत्यादि लक्षणों वाले को जीव कहते हैं।

जीव का जघन्य एक भेद चेतना लक्षण मध्यम १४ (चौदह) भेद उत्कृष्ट ५६३ भेद हैं।

मध्यम चौदह भेद इस प्रकार हैं—

जीव का १ भेद—चेतना लक्षण।

जीव के २ भेद—१ त्रस २ स्थावर।

जीव के ३ भेद—१ स्त्री वेद २ पुरुष वेद ३ नपुंसक वेद।

जीव के ४ भेद नारकी २ तिर्यञ्च ३ मनुष्य ४ देवता।

जीव के ५ भेद—पांचों जातियाँ—१ एकेन्द्रिय २ द्वीन्द्रिय ३ त्रीन्द्रिय ४ चतुरिन्द्रिय ५ पंचेन्द्रिय।

जीव के ६ भेद—१ पृथ्वी २ अप् ३ तेउ ४ वायु ५ वनस्पति ६ त्रसकाय।

जीव के ७ भेद—१ नारकीय २ देव ३ देवी ४ मनुष्य ५ मानुषी ६ तिर्यञ्च ७ तिर्यञ्ची।

जीव के ८ भेद–चार गति का पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के ९ भेद–पाँच स्थावर, चार त्रस।

जीव के १० भेद–पाँच जाति का पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के ११ भेद–पाँच सूक्ष्म पृथ्वीकाय से लेकर वनस्पति पर्यन्त। छः बादर पृथ्वीकाय से लेकर त्रस तक।

जीव के १२ भेद–१ पृथ्वीकाय २ अप्काय ३ तेउकाय ४ वायु काय ५ वनस्पतिकाय के दो भेद हैं ६ प्रत्येक ६ साधारण ७ द्वीन्द्रिय ८ त्रीन्द्रिय ९ चतुरिन्द्रिय। पंचेन्द्रिय के चार भेद १ नारकी ११ तिर्यञ्च १२ मनुष्य १३ देवता।

जीव के १४ भेद–एकेन्द्रिय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय के दो भेद–पर्याप्त अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय के दो भेद–पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय के दो भेद–पर्याप्त अपर्याप्त। पंचेन्द्रिय के ४ भेद–सन्नी असन्नी का पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के उत्कृष्ट भेद

नेरिय तिरियनरदेवा चउदस अडयाल तिन्नीसयतिन्नेव अठाणु सयमेग पणसय मेयायेतेसट्ठी।

नरक के १४ भेद

१ घम्मा २ वंशा ३ सीला ४ अन्जना ५ रिट्ठा ६ मघा ७ माघवई इन सातों का पर्याप्त और सातों का अपर्याप्त एवं १४ चौदह।

सात नारकों के भेद

१ रत्न प्रभा २ शकर प्रभा ३ बालु प्रभा ४ पंक प्रभा ५ धूम प्रभा ६ तम प्रभा ७ तमतमा प्रभा एवं १४ ।

तिर्यंच के ४८ भेद

एकेन्द्रिय के २२

पृथ्वीकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त ।

अपूकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त ।

तेउकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त ।

वायुकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त ।

वनस्पति काय के ६ भेद

सूक्ष्म प्रत्येक साधारण। इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त । एवं एकेन्द्रि कुल २२ भेद हुये ।

विकलेन्द्रिय के ६ भेद

द्वीन्द्रिय ७ लाख कुल कोड त्रीन्द्रिय ८ लाख कुल कोड चतुरिन्द्रय ९ लाख कुल कोड इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त ।

तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के २ भेद

जलचर १ स्थलचर २ खेचर ३ उरपुर ४ भुजपुर ५ यह पांच सन्नी और पांच असन्नी । इन दस का पर्याप्त और अपर्याप्त एवं २ । सर्व मिलकर तिर्यञ्च के ४८ भेद हुये ।

जो जल में चले उसे जलचर कहते हैं। जैसे—मच्छ, कच्छ मगर, सुसमारादि, इनका कुल १२॥ लाख करोड़ का है।

जो पृथ्वी पर चले उसे स्थलचर कहते हैं। जैसे—एक खुरा—गधा घोड़ा खच्चर आदि। दो खुरा—गाय, भैंस बकरी आदि। गंडीपया—हाथी गैंडा आदि। सन्नीपया—शेर, बिल्ली कुत्ता आदि। इनका कुल १ लाख करोड़ का है।

जो आकाश में उड़ने वाले जीव हैं उन्हें खेचर कहते हैं। जैसे—चरम पंखी—चमड़े के पंख वाले। चामचिड़ी चमगीदड़) आदि। रोम पंखी—जैसे तोताचिड़ी कबूतर आदि। समुद्ग पक्षी—जिसके पंख डब्बे के आकार के हैं यह अढाई द्वीप के बाहर होते हैं। वितत पंखी—जिनके पंख कमलदल के आकार के होते है। यह भी अढाई द्वीप के बाहर होते हैं। इनका कुल १२ लाख करोड़ का होता है।

जो छाती के बल चलें उनको उरपुर कहते हैं। जैसे—अहि अजगर महोरग आसालिया आदि। इनका कुल १ लाख करोड़ का होता है।

जो भुजाओं के बल चलें उनको भुजपुर कहते है। जैसे—नेवल चूहा गलहरी आदि। इनका कुल ९ लाख करोड़ का होता है।

इस प्रकार तिर्यंच के ४८ भेद हुए।

३०३ तीन सौ तीन प्रकार के मनुष्य

१५ (पन्द्रह) कर्मभूमि के मनुष्य ३० (तीस) अकर्मभूमि के मनुष्य ५६ (छप्पन) अन्तरद्वीपों के मनुष्य यह सब एक सौ एक हुए। इन एक सौ एक का पर्याप्त और अपर्याप्त दो सौ दो हुए। एक सौ एक क्षेत्रों के समूर्च्छिम् मनुष्य—अपर्याप्त। कुल तीन सौ तीन हुए

१५ कर्मभूमि के मनुष्य—कर्मभूमि किसे कहते हैं? जहां असि—खड्गविधि मसी—लेखनविधि कृषि—खेती कर्म, राज्यनीति—साधु साध्वी धर्म व्यवहार, ७२ कला मनुष्यों की ६४ कला स्त्रियों की १०० प्रकार का शिल्पकर्म। जहाँ पर यह सर्व कार्य विद्यमान हों उसे कर्मभूमि कहते हैं। ५ भरत ५ इरावर्त ५ महाविदेह, यह १५ कर्मभूमि मनुष्यों के क्षेत्र हैं। एक लाख योजन का जम्बूद्वीप है। इसमें एक भरत एक इरावर्त एक महाविदेह यह तीन क्षेत्र हैं।

जम्बूद्वीप के चारों ओर दो लाख योजन का लवण समुद्र है। लवण समुद्र के चारों ओर ४ लाख योजन का धातकी खण्ड है। धातकी खण्ड में २ भरत, २ इरावत २ महाविदेह यह छः क्षेत्र हैं। धात की खण्ड के चारों ओर आठ लाख योजन का कालोदधि समुद्र है। कालोदधि के चारों ओर १६ लाख योजन का पुष्करद्वीप है। इसके मध्य चारों ओर मनुष्योत्तर पर्वत है इसके आभ्यन्तर अर्ध

पुष्कर द्वीप में मनुष्य रहते हैं। उसमें २ भरत २ इरावर्त २ महाविदेह यह छः क्षेत्र हैं।

१० अकर्मभूमि के मनुष्य। अकर्मभूमि किसे कहते हैं? असि—खड्गविधि मसी—लेखनविधि कृषि खेतीकर्म राजनीति-साधु साध्वी धर्म-व्यवहार नहीं ७२ कला पुरुषों की ६४ कला स्त्रियों की नहीं। १०० प्रकार का शिल्पकर्म नहीं, वहां इत्यादि काम नहीं उन्हें अकर्मभूमि-क्षेत्र कहते हैं।

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ५ हरिवास ५ रम्यकवास ५ हैमवय ५ हिरण्यवय यह तीस हुए। इसमें से १ देवकुरु १ उत्तरकुरु, १ हरिवास १ रम्यकवास १ हैमवय १ हिरण्यवय यह छः क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ देवकुरु २ उत्तरकुरु २ हरिवास २ रम्यकवास २ हेमवय २ हिरण्यवय यह १२ बाहर क्षेत्र धातकी खण्ड में हैं।

२ देवकुरु २ उत्तरकुरु २ हरिवास २ रम्यकवास २ हेमवय २ हिरण्यवाय यह १२ क्षेत्र अर्धपुष्कर द्वीप में हैं। एवं सर्व ३ हुए। १ प्रकार के कल्पवृक्षों से अकर्मभूमि के मनुष्यों की इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

१ प्रकार के कल्पवृक्षों के नाम

१ मतयङ्गा —मधु, रस सुगन्धित फलों का दाता।
२ भयङ्गा —अनेक प्रकार के बर्तनों का दाता।
३ तुडियङ्गा —४९ प्रकार के वाद्ययन्त्रों का दाता जिनसे स्वर निकलते हैं।

४ दीवी—जिससे रोशनी निकलती है।

५ जोई=सूर्यवत् तेज कान्ति वाले।

६ चित्रङ्गा=विश्राम सहित फूलों की माला—गुच्छे हैं जिसमें।

७ चित्ररसा—मनोगम भोजन सामग्री के दाता।

८ मनयङ्गा=जिसमें अनेक प्रकार के वस्त्रों का काम देने वाले गुण हैं

९ मनयङ्गा—जिनमें अनेक प्रकार के आभूषणों के देन वाले गुण हैं

१ गेह कारा=शोभन घरों के आकार वाले मनोगम शयनादि विश्राम का दाता।

५६ अन्तरद्वीपे मनुष्य कहां हैं ?

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला चूलहेमवन्त पर्वत है पीला स्वर्णमयी १ योजना का ऊंचा २५ योजना का भूमि में १ ५२ योजन १२ कला का चौड़ा २४९३२ योजन का लम्बा इसकी बांह ५३५० योजन २५ कला की एक एक है इसकी जिह्वा २४९३२ योजन पौण कला की है। इसकी धनुष पिष्टिका २५२३१ योजन ४ कला की है। पर्वत के पूर्व पश्चिम में ४ दाढ़ा हैं। एक एक चौरासी सौ योजन से कुछ अधिक लवण समुद्र में लम्बी हैं। एक एक दाढ़ पर सात सात अन्तरद्वीप (मुलक) है सो इस प्रकार है—

मेहमहे २२ विज्जुमुहे २३ विज्जुदन्ते २४ घणदन्ते २५ लठदन्ते २६ मुठदन्ते २७ सुघदन्ते २८।

अट्ठाईस चुलहेमवन्त पर्वत के अट्ठाईस सिखरी पर्वत के इति ५६ अन्तरद्वीपे मनुष्य वर्णन।

१५ कर्मभूमि ३ अकर्मभूमि ५६ अन्तरद्वीप यह १०१ हुये। इनका पर्याप्त और अपर्याप्त २०२ हुये। इन्हीं के १०१ क्षेत्रों के संमूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त सर्व मिलकर मनुष्यों के ३०३ भेद हुये।

संमूर्च्छिम मनुष्य १४ स्थानों में उत्पन्न होते हैं। १४ स्थानों के नाम – उच्चारेसु वा १ पासवणेसु वा २ खेलेसु वा ३ संघाणेसु वा ४ वन्तेसु वा ५ पित्तेसु वा ६ पूयेसु वा ७ सोणियेसु वा ८ सुक्केसु वा ९ सुक्कपुद्गलपरिसाडेसु वा १० मृतकजीव कलेवरेसु वा ११ स्त्रीपुरुषसंयोगेसु वा १२ नगरनिद्धमनेसु वा १३ सर्वअसुचीस्थानेसु वा १४।

१९८ प्रकार के देवता

१० प्रकार के भवनपति देव—असुर कुमार १ नाग कुमार २ सुवर्ण कुमार ३ विद्युत् कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिशा कुमार ८ पवन कुमार ९ स्तनित कुमार १०।

१५ प्रकार के परमाधर्मी देव – अम्बे १ अम्बरसे २ सामे ३ सबले ४ रुद्द ५ विरुद्द ६ काले ७ महाकाले ८ असिपत्ते

९ मनुपत्ते १० कुंभिये ११ मालुए १२ वेयारण १३ खरस्वरे १४ महाघोषे १५।

१६ प्रकार के वाणव्यन्तर देव—पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गन्धर्व ८ आणपन्ने ९ पाणपन्ने १० इसीवाय ११ भूयवाय १२ कन्दीय १३ महाकन्दिय १४ कुहण्डे १५ पयंगदेवा १६।

१० प्रकार के तिर्यकजृम्भक देव—अन्न जंभका १ पाण जंभका २ लयण जंभका ३ सयण जंभका ४ वस्त्र जंभका ५ पुष्पजम्भका ६ पुष्प फल जम्भका ७ फल जम्भका ८ बीज जम्भका ९ अविअत्त जम्भका १०।

१० प्रकार के ज्योतिषी देव—चन्द्रमा १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५। यह ५ चर ५ अचर कुल १० हुए। यह अढाई द्वीप में चलते हैं और बाहर अचल होते हैं।

३ प्रकार के किल्विषी देव—तीन पल्य वाले १ तीन सागर वाले २ तेरह सागर वाले ३।

तीन पल्य वाले ज्योतिषी देवों से ऊपर हैं परन्तु पहले दूसरे देवलोक से नीचे। तीन सागर वाले पहले दूसरे देवलोक से ऊपर किन्तु तीसरे चौथे देवलोक से नीचे हैं।

तेरह सागर वाले—पांचवें देवलोक से ऊपर और छटे देवलोक से नीचे।

९ प्रकार के लोकान्तिक देव—सारस्वत १ आदित्य २ वह्नि ३

वरुणी ४ गन्धतोया ५ तोषिया ६ अव्याबाह ७ अग्निच्चा ८ रिट्ठाय चैव ९।

१२ प्रकार के कल्पवासी देव—सुधर्मा देवलोक १ ईशान देवलोक २ सनत्कुमार देवलोक ३ माहेन्द्र देवलोक ४ ब्रह्म देवलोक ५ लांतक देवलोक ६ महाशुक्र देवलोक ७ सहस्त्रार देवलोक ८ आनन्त देवलोक ९ प्राणान्त देवलोक १ अरणक देवलोक ११ अच्युत देवलोक १२।

नव नवग्रैवेयक देवलोक—भद्द १ सुभद्द सुजाये ३ सुमणसे ४ सुदर्शन ५ प्रियदर्शने ६ अमोहे ७ सुपडिबुद्धे ८ यशोधरे ९।

पांच अनुत्तर विमानों के नाम—विजय १ वैजयन्त २ जयन्त ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५। यह सब ९९ प्रकार के देवता हुए। इन ९९ का पर्याप्त और अपर्याप्त सर्व ११८ हुए।

इति जीवतत्व समाप्त

२ अजीवतत्व

अजीव पुण्य पाप का कर्ता नहीं सुख दुःख का भोक्ता नहीं, शुभाशुभ कर्म कर्ता नहीं भोक्ता नहीं अचेतना लक्षण योगप्राण रहित जड़ लक्षण सहित।

अजीवतत्व के जघन्य १४ भेद हैं जो कि पच्चीस बोल के बाबड़े में आ चुके हैं।

उत्कृष्ट ५६ भेद जिसमें ३ अरूपी और २३ रूपी हैं।

१० अरूपी जसे—धर्मास्तिकाय के ३ भेद। स्कन्ध १

देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय के ३ भेद। स्कन्ध १ देश २ प्रदेश ३। आकाशास्तिकाय के ३ भेद। स्कन्ध १ देश २ प्रदेश ३। काल का एक भेद। कुल १ हुये।

१ धर्मास्तिकाय के ५ भेद—द्रव्य से १ क्षेत्र से लोक प्रमाण २ काल से अनादि अनन्त ३ भाव से अरूपी ४ गुण से चलन गुण सहाय ५। उदाहरण जैसे—पानी में मत्स्य। (मछली)

२ अधर्मास्तिकाय के ५ भेद द्रव्य से १ क्षेत्र से लोक परिमाण २ काल से अनादि अनन्त ३ भाव से अरूपी गुण से स्थिर गुण सहाय ५। दृष्टान्त जैसे—मुसाफिर को छाया का आधार।

३ आकास्तिकाय के ५ भेद द्रव्य से १ क्षेत्र से लोकालोक परिमाण २ काल से अनादि अनन्त ३ भाव से अरूपी ४ गुण से आकाश का अवकाश देने का स्वभाव ५। दृष्टान्त जैसे—दूध में मीठा दीवार में कीला इत्यादि।

४ काल के भेद—द्रव्य से अनन्त १ क्षेत्र से अढ़ाई द्वीप परिमाण २ काल से अनन्त ३ भाव से अरूपी ४ गुण से वर्तमा लक्षण ५ उदाहरण जैसे—नूतन वस्त्र जीर्ण हो जाता है। यह सर्व मिलकर तीस भेद अरूपी जड़ के हुए।

रूपी पुद्गल के ५३० भेद

५ वर्ण २ गन्ध ५ रस स्पर्श ५ संस्थान।

५ वर्ण

काला नीला पीला लाल सफेद।

काले का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ सस्थान एवं २०।

नीले का करिये भाजन-चार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें बीस। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ सस्थान एव २०।

पीले का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें २ । २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एव २०।

लाल का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ सस्थान एव २०।

सफेद का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ सस्थान एवं २०। सर्व मिलकर २ ×५=१० भेद ५ वर्णो के हुए।

दो गंध

सुगन्ध का करिये भाजन—दुर्गन्ध रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें २३। ५ वर्ण ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एव २३।

दुर्गन्ध का करिये भाजन—सुगन्ध रखिये प्रतिपक्षी बोल पावें २३। ५ वर्ण ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३ सर्व मिलकर ४६ हुए।

पांच रस

कड़वा कषायला खट्टा मीठा तीखा।

कड़वे का करिये भाजन चार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावे २ । ५ वर्ण २ गन्ध ८ स्पर्श ५ सस्थान एव २०।

कषायले का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी बोल

पार्वे २ । ५ वर्ण २ गन्ध ८ स्पर्श ५ संस्थान । एव २०

खट्टे का करिये भाजन—खार रखिये प्रतिपक्षी बोल पार्वे २ । ५ वर्ण २ गन्ध ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २ ।

मीठे का करिये भाजन—खार रखिये प्रतिपक्षी बोल पावे २ । ५ वर्ण २ गन्ध ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २ ।

तीखे का करिये भाजन—खार रखिये प्रतिपक्षी बोल पार्वे २ । ५ वर्ण २ गन्ध ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २ ।

५ रसों के सब मिलकर सौ भेद हुए ।

आठ स्पर्श

१ कठोर, २ नरम ३ हलका ४ भारी ५ तप्त (गर्म) ६ ठंडा ७ लूखा ८ चिकना ।

कठोर का करिये भाजन—नरम रखिये प्रतिपक्षी । बोल पार्वे २३ । ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान । एव २३ ।

नरम का करिये भाजन—कठोर रखिये प्रतिपक्षी । बोल पावें २३ । ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान । एव २३ ।

हलके का करिये भाजन—भारी रखिये प्रतिपक्षी । बोल पार्वे २३ । ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान । एव २३ ।

भारी का करिये भाजन—हल्का रखिये प्रतिपक्षी । बोल पावें २३ । ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३ ।

तत्त का करिये भाजन—ठण्डा रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावे ११। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस १ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३।

ठण्डे का करिये भाजन—तत्ता रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २३। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३।

रुक्ष का करिये भाजन—चिकना रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २३। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३।

चिकन का करिये भाजन—रूखा रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २३। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३।

एवं सर्व मिलकर २३×८=१८४ एक सौ चौरासी भङ्ग स्पर्शों के हुए।

५ पांच संस्थान

१ परिमण्डल संस्थान २ वट्ट संस्थान ३ त्र्यंस्र संस्थान ४ चउरस संस्थान ५ आयत संस्थान।

परिमण्डल का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

वट्ट संस्थान का करिये भाजन चार रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

त्र्यंस्र संस्थान का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

चउरस संस्थान का करिये भाजन—चार रखिये प्रतिपक्षी। बोल पावें २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

आयत संस्थान का करिये मोगन–चार रखिये प्रतिपक्षी। बीस पार्वे २० । ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २ । सर्व मिलकर ५ सस्थानों के १ भेद हुए।

१ ० वर्णों के ४६ गन्धों के १० रसों के १८४ स्पर्शों के १ ० सस्थानों के। सर्व मिलकर रूपी पुद्गल (प्रकृति-बद्ध) के ५३० भद हुए।

३० भेद अरूपी के ५३० रूपी के सर्व अजीव तत्त्व के ५६ भद सम्पूर्ण हुए।

३ पुण्य तत्त्व

पुण्य तत्त्व उसे कहते हैं जो पुण्य बान्धता दुर्लभ भोगना सुलभ पुण्य प्राणी को सुख देने वाला होता है। पुण्य के फल मीठे होते हैं। पुण्य निर्जरा करने में सहायक होता है।

मनुष्य देवगति ऋद्धि सिद्धि आदि सुखों के देने वाले को पुण्यतत्त्व कहते हैं।

पुण्य ९ प्रकार से उपार्जन किया जाता है

१ अन्न पुण्य २ पाण पुण्य ३ लयण पुण्य ४ सयण पुण्य ५ वस्त्र पुण्य ६ मन पुण्य ७ वचन पुण्य ८ काय पुण्य ९ नमस्कार पुण्य।

पुण्य ४२ प्रकार से भोगा जाता है

चार कर्मों के उदय–१ वेदनीय कर्म २ आयु कर्म ३ गोत्र कर्म ४ नाम कर्म।

वेदनीय कर्म की १ प्रकृति—सातावेदनीय।

आयु कर्म की ३ प्रकृति—१ देवता की आयु २ मनुष्य की आयु ३ संज्ञीपंचेन्द्रिय तिर्यञ्च की आयु युगलियों की अपेक्षा।

गोत्रकर्म की एक प्रकृति—उच्च गोत्र।

नाम कर्म की ३७ प्रकृति—

१ गति दो १ मनुष्य गति २ देवगति।

२ जाति एक—१ संज्ञी पंचेन्द्रिय।

३ शरीर पांच–१ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तैजस्य शरीर ५ कार्मण शरीर।

४ तीन अङ्गोपांग–१ औदारिक का अङ्गोपांग २ वैक्रिय का अंगोपांग ३ आहारिक का अंगोपांग।

५ संघयण एक वज्र ऋषभ नाराच संघयण।

६ संस्थान एक–सम चौरस संस्थान।

७ शुभ चार–१ शुभ वर्ण २ शुभ गन्ध ३ शुभ रस ४ शुभ स्पर्श।

८ अनुपूर्वी दो–१ मनुष्य की अनुपूर्वी दूसरी देवता की अनुपूर्वी।

९ चाल एक–१ शुभ चाल।

१०–प्रत्येक नाम की ७ प्रकृति–१ पराघात नाम २ उच्छ्‌वास नाम ३ आताप नाम ४ उद्योत नाम ५ अगुरु लघुनाम ६ निर्माणनाम ७ तीर्थंकर नाम।

११ त्रस नाम की १ प्रकृति

१ त्रस नाम २ बादर नाम ३ प्रत्येक नाम ४ पर्याप्त नाम ५ स्थिर नाम ६ शुभ नाम ७ सौभाग्य नाम ८ सुस्वर नाम ९ आदेय नाम १० यशोकीर्ति नाम।

इति पुण्यतत्त्व समाप्त।

४ पापतत्त्व

पापतत्त्व किसे कहते हैं? पाप बाँधना सुलभ भोगना कठिन। पाप प्राणी को दुःख देता है, आत्मा को भारी करता है, अशुभ गतियों में रुलाता है, अशुभ कर्मों के बाँधने में सहायक होता है इत्यादि रोग शोक कष्ट देने वाले को पापतत्त्व कहते हैं।

पाप १८ प्रकार से बांधा जाता है

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १ राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ मायामृषा १८ मिथ्यादर्शन शल्य पाप ८२ प्रकार से भोगा जाता है।

आठ कर्मों के उदय

१ ज्ञानावरणीय कर्म की ५ प्रकृति—१ मतिज्ञानावरणीय २ श्रुतज्ञानावरणीय ३ अवधिज्ञानावरणीय ४ मनःपर्ययज्ञाना वरणीय ५ केवल ज्ञानावरणीय।

२ दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृतियें —१ चक्षुदर्शनावरणीय

२ चक्षुदर्शनावरणीय ३ अवधिदर्शनावरणीय ४ केवलदर्शना वरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानगृद्धिका।

३ वेदनीय कर्म की एक प्रकृति—असातावेदनीय।

४ मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति—जिसमें १६ कषाय नव नोकषाय मिथ्यात्वमोहनीय।

१६ कषाय

अनन्तानुबंधी का चौक-अनंतानुबंधी का क्रोध जैसे पत्थर की रेखा। मान जैसे वज्र का स्तम्भ। माया जैसे बांस की जड़ का बल। लोभ जैसे किरमची मजीठ का रंग। इन चारों की स्थिति आयु पर्यन्त की घात करें सम्यक्त्व की तथा गति नरक की।

अप्रत्याख्यानी का चौक–अप्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे सूखे तालाब (जलाशय) की रेखा मान जैसे हाड़ का स्तम्भ माया जैसे मैंढ़ के सींगों का बल लोभ जैसे नगर की मोरी के कीचड़ का रंग इन चारों की स्थिति एक वर्ष की घात करे देशव्रत की (श्रावक व्रत की) गृहस्थ व्रत की गति तिर्यञ्च की।

प्रत्याख्यानी का चौक–प्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे गाड़ी के पहिये की रेखा (लकीर) मान जैसे काष्ठ का स्तम्भ माया जैसे चलते बैल के पेशाब का बल लोभ जैसे गाड़ी के खंजन का रंग। इन चारों की स्थिति चार मास की घात करे

साधुव्रत की (सर्व व्रत की) गति मनुष्य की।

संज्वलन का चौक—संज्वलन का क्रोध जैसे पानी की रेखा (लकीर) मान जैसे तृण का स्तम्भ माया जैसे वन के घासे का वल लोभ जैसे हल्दी के पत्ते का रंग। स्थिति क्रोध की २ मास की मान की १ मास की माया की १५ दिन की। लोभ की अन्तर्मुहूर्त की घात करे वीतरागपद की गति देवलोक की।

नव नोकषाय—१ हास्य २ रति ३ अरति ४ भय ५ शोक ६ दुर्गंछा ७ स्त्रीवेद ८ पुरुषवेद ९ नपुंसकवेद ९।

मोहनीय कर्म की एक प्रकृति—एक मिथ्यात्व मोहनीय। इस प्रकार कुल २६ हुई।

५ आयु कर्म की एक प्रकृति—नरक की आयु।

६ नाम कर्म की ३४ प्रकृति।

१ गति दो—१ नरक गति २ तिर्यञ्च गति।

२ जाति चार—एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय।

३ संहनन पांच—ऋषभ नाराच १ नाराच २ अर्द्धनाराच ३ कीलक ४ सेवार्तक संहनन ५।

४ संस्थान पांच—१ न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान २ सादि संस्थान वामन संस्थान ४ कुब्ज संस्थान ५ हुण्डक संस्थान।

५ अशुभ चार १ अशुभ वर्ण २ अशुभ गन्ध ३ अशुभ रस ४ अशुभ स्पर्श।

६—अनुपूर्वी दो—१ नरक की अनुपूर्वी २ तिर्यञ्च की अनुपूर्वी।

७ नाम एक-अशुभ चाल।

८ नाम एक—अपघात नाम।

९ स्थावर नाम की १० प्रकृति—१ स्थावर नाम २ सूक्ष्म नाम ३ अपर्याप्त नाम ४ साधारण नाम ५ अस्थिर नाम ६ अशुभ नाम ७ दुर्भाग्य नाम ८ दुस्वर नाम ९ अनादेय नाम १० अयशोकीर्ति नाम।

गोत्र कर्म की एक प्रकृति—नीच गोत्र।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति—१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय ४ उपभोगान्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय। एवं ८२।

इति पापतत्त्व समाप्त।

आश्रवतत्त्व

आश्रवतत्त्व किसे कहते हैं ? जीव रूपी तालाब में आश्रवरूपी नाला से पाप रूपी पानी आवे जिससे आत्मा मलीन और भारी होकर संसार में जन्म मरण जरा रोग शोक आधिव्याधि अशुभ कर्मबन्ध भोगता फिरे उसको आश्रवतत्त्व कहते हैं।

आश्रवतत्त्व के जघन्य बीस भेद

१ मिथ्यात्व आश्रव २ अव्रत आश्रव ३ कषाय आश्रव

९ अपच्चक्खाणिया-व्रत पच्चक्खाण न करने से अव्रत से।

१ मिच्छादंसण वत्तिया-जिन वचनों पर श्रद्धा न करके विपरीत प्ररूपण करने से।

११ दिट्ठिया-कौतुक-तमाशा मेला आदि अप्रामित उत्सवों में राग करने से।

१२ पुट्ठिया-रागभाव से स्त्री पुरुष पशु वस्त्रादि को स्पर्श करने से।

१३ पाडुच्चिया-जीव अजीव पर हुए राग, द्वेष ऐश्वर्य दिखलाने से।

१४ सामंतोवणिवाइया अपने या अन्य के द्विपद चौपद तथा वस्तुओं की राग से प्रशंसा करने से।

१५ नेसत्थिया-लकड़ी कंकर पत्थर आदि पुद्गल का यतना से इधर उधर फैंकने से।

१६ साहत्थिया-अपने हाथ से किसी को सताना।

१७ आणवणिया-पापकारी आज्ञा देना।

१८ विदारणीया जीव अजीव को विदारण करने से।

१९ अणाभोगवत्तिया-अज्ञानपने शून्य उपयोग से लगे।

२० अणवकंखवत्तिया-मिथ्या अन्य धर्म की वांछा करने से।

२१ अनुपयोगी-बिना उपयोग कार्य करने से।

२२ समुदाणकिरिया-अशुभ-पाप कार्य में मनुष्यों के साथ कर्म बांधने से

२३ पेज्जवत्तिया–राग से।

२४ द्वेषवत्तिया–द्वेष करने से।

२५ इरियावहिया किरिया–शुभ योगों के चलने से। केवल ज्ञानी को लगती है पहले समय लगती है, दूसरे समय वेदते हैं। तीसरे समय निर्जरा देते हैं।

१७ प्रकार का असंयम

जैसे—५ इन्द्रिय ५ आश्रव ४ कषाय ३ अशुभ योग एवं ४२।

इति आश्रवतत्त्व समाप्त।

६ संवर तत्त्व

संवर तत्त्व किसे कहते हैं? जीव रूपी तालाब में आश्रव रूपी नाला के द्वारा पापरूपी पानी आते हुए को संवर रूपी पट्टों से रोका जाय उसको संवर तत्त्व कहते हैं।

संवरतत्त्व के जघन्य २० भेद

१ सम्यक्त्व सम्वर २ व्रतपच्चक्खाण सम्वर ३ अप्रमाद सम्वर ४ अकषाय सम्वर ५ शुभयोग सम्वर ६ प्राणातिपात जीव की हिंसा न करे तो सम्वर ७ मृषावाद झूठ न बोले तो सम्वर ८ अदत्तादान–चोरी न करे तो सम्वर ९ मैथुन न सेवे तो सम्वर १० परिग्रह न रखे तो सम्वर ११ श्रुतेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १२ चक्षु इन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १३ घ्राणेन्द्रिय वश मे करे तो सम्वर १४ रसेन्द्रिय वश में करे तो

सम्वर १५ स्पर्श इन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १६ मन वश में करे तो सम्वर १७ वचन वश में करे तो सम्वर १८ काय वश में करे तो सम्वर १९ वस्त्रादि यत्ना से लेवे देवे रखे तो सम्वर २ सुई कुशाग्रमात्र यत्ना से लेवे रखे तो सम्वर। एव २ ।

उत्कृष्ट ५७ भेद

जिसमें २२ परिसह-१ क्षुधा परिसह २ पिपास परिसह ३ शीत परिसह ४ उष्ण परिसह ५ दंसमसग परिसह ६ अचेल परिसह ७ अरति परिसह ८ स्त्री परिसह ९ चरिया परिसह १ निसिहिया परिसह ११ शय्या परिसह १२ अक्रोश परिसह १३ बध परिसह १४ याचना परिसह १५ अलाभ परिसह १६ रोग परिसह १७ तणफास परिसह १८ जल परिसह १९ सत्कार पुरस्कार परिसह २ प्रज्ञा परिसह २१ अज्ञान परिसह २२ दर्शन परिसह ।

आठ प्रवचन=पांच समिति और तीन गुप्ति । पांच समिति जैसे—१ ईर्या समिति २ भाषा समिति ३ एषणा समिति आदान भड मत्त निक्षेपण समिति ५ उच्चार पासवण खेल जल्ल मल्ल सिंघाण परिठावणिया समिति १ तीन गुप्ति मनो गुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति ।

१ ईर्या समिति के चार भेद-१ आलम्बन २ काल ३ मार्ग ४ यत्ना ।

आलम्बन के तीन भेद-१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ।

काल का एक भेद-ईर्या का काम दिवस का देख के रात्रि में प्रमार्जन करके ।

मार्ग का एक भेद—संयम मार्ग चले असंयम मार्ग वर्जे।

ईर्या के चार भेद—द्रव्य क्षेत्र काल भाव। द्रव्य से ईर्या सोधता हुआ दस बोल वर्ज के चले।

१ शब्द २ रूप ३ गन्ध ४ रस ५ स्पर्श ६ वायणा ७ पृच्छना ८ परियट्टणा ९ अनुपेक्षा १० धर्मकथा।

क्षेत्र से—साढ़े ३॥ हाथ प्रमाण देखकर चले वा शरीर प्रमाण

काल से—दिन को देखकर रात्रि को पूंज कर चले भाव से उपयोग सहित गुण से निर्जरा के हेतु।

२ भाषा समिति के चार भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से आठ बोल वर्ज के भाषा बोले—१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ हास्य ६ भय ७ मुखारि वचन ८ विकथा।

क्षेत्र से जहां विचरे सब को साताकारी—प्रिय भाषा बोले।

काल से—पहर रात्रि बाद ऊंचे स्वर से न बोले।

भाव से—उपयोग सहित। गुण से निर्जरा के हेतु।

३ एषणा समिति के चार भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से—साधु अपनी वृत्ति अनुसार ४२ दोष टाल कर आहार पानी ग्रहण करे। गृहस्थी अपनी वृत्ति अनुसार निर्दोष

अपने हक्क का ग्रहण करे । अन्य के हक्क पर अधिकार न करे ।

क्षेत्र से—साधु अर्ध योजन उपरान्त आहार पानी ले जाव नहीं लावे नहीं । क्षेत्र वास्ते अम उपरान्त भी ले जा सकता है गृहस्थ—राष्ट्र धर्म को हानि न पहुंचे वहाँ तक व्यावहारिक काय करता हुआ राष्ट्रदेश को हानि न पहुंचावे ।

काल से साधु पहले पहर का आहार पानी चौथे पहर न रक्खे । गृहस्थी बिगड़ जाने वाले द्रव्य (दूसरों) को हानिकारक या जिससे पाप की वृद्धि हो एसे द्रव्यों का संचय चिरकाल तक न करे ।

भाव से—साधु पांच मांडले के दोष टालकर आहार पानी भोगे ।

गाथा

सयोजनाप्पमाणे—इगाल धूम कारणे पडमा, वसहि वहरतरया रसहे उच्चम योगा ।

गृहस्थ भी रसनेन्द्रिय के वश न होवें । गुण से निजरा के हेतु ।

आदाण भंड मत निक्षेपणा समिति के चार भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से भंडोपगरण वस्त्र पात्र आदि मार्यादा से अधिक न रखना ।

क्षेत्र स-रास्ते बिखरे न रखना ।

भाव से उपयोग सहित। गुण से निर्जरा के हेतु।

५ उच्चारपासवण खेल जल्लमल्लसिंघाण परिठावणिया समिति के चार भेद।

१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से-दस बोल वर्जे के परठे।

प्रथम चौभङ्ग

१ जहा कोई आता हो देखता हो वहां नहीं परठें।

२ जहा कोई आता है देखता नहीं वहां नहीं परठ।

३ जहा कोई आता नहीं देखता है वहां नहीं परठें।

जहा कोई आता नही देखता नहीं वहां परठे।

दूसरे-स्व आत्मा पर आत्मा की विराधना न हो वहां परठ।

तीसरे ऊंची नीची भूमिका न हो वहां परठे।

चौथे पोली भूमि घास अन्न पत्र आदि न हो वहां परठे।

पांचवं-थोड़े काल की अचित्त हो वहां परठे।

छठे सचित्त भूमि पर न आय परठने वाली वस्तु ऐसी विस्तारवाली भूमि पर परठे।

सातवं-चार अंगुल प्रमाण नीचे तक अचित्त भूमि पर परठे।

आठवं-ग्राम के पास (दृष्टिगोचर स्थान पर) न परठे।

नौवं चूहे आदिक के बिलों पर न परठे।

दशर्वे त्रस प्राणी बीज व हरी पर न परठ। परठ के वोसरे वोसरे करे।

क्षेत्र से-जहां विचरे।

काल से-दिन को देखकर रात्रि को परिमाजन करके चले।

भाव से-उपयोग सहित गुण से निर्जरा के हेतु।

तीन गुप्ति १ मनोगुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति।

मनोगुप्ति के चार भेद १ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से सरंभ समारंभ आरंभ में मन प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्ते तो फल न लगने देवे। यदि फल भी लगे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से-जहां विचरे।

काल से-आयु पर्यन्त।

भाव से-उपयोग सहित।

गुण से-निर्जरा के हेतु।

वचन गुप्ति के चार भेद-१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से-सरंभ समारंभ आरंभ में वचन प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्ते तो फल न लगने देवे यदि फल भी लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से-जहां विचरे।

काल से-आयु पर्यन्त।

भाव से—उपयोग सहित।

गुण से—निजरा के हेतु।

काय गुप्ति के ४ भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से-सरभ समारभ आरभ में काया प्रवर्तावे नहीं यदि प्रवत आवे तो फल न लगने दे यदि लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से-जहा विचरे।

काल से-आयु पर्यन्त।

भाव से-उपयोग सहित।

गुण से—निजरा के हेतु।

१० प्रकार का यतिधर्म

१ खंति २ मुत्ति ३ अज्जवे ४ मद्दवे ५ लाघवे ६ सच्चे ७ सयमे तव ९ चेइये १ बभचेरवासे।

१२ प्रकार की भावना

१ अनित्य भावना भरत चक्रवर्ती ने भावी। २ अशरण भावना अनाथी मुनि ने भावी। ३ ससार असार भावना शालिभद्र जी ने भावी। ४ एकान्त भावना नेमिराज ऋषीश्वर ने भावी। ५ अन्य भावना मृगापुत्र जी ने भावी। ६ अशुचि भावना सनतकुमार चक्री ने भावी। ७ आश्रव भावना समुद्र पाल ने भावी। ८ सवर भावना केशी गौतम जी ने भावी। ९ निजरा भावना अर्जुन माली ने भावी। १० धर्म दुर्लभ भावना धर्म रुचि अणगार ने भावी। ११ लोक स्वरूप भावना

जिनराज ऋषि से भावी। १२ बोध दुर्लभ भावना आदिनाथ जी के ६८ पुत्रों ने भावी।

चारित्र पांच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

इति संवरतत्त्व समाप्त।

७ निर्जरातत्त्व

निर्जरातत्व किसे कहते हैं? जीवरूपी वस्त्र पापरूपी मैल से जो मलिन हो रहा है उसको ज्ञान रूपी जल और तप संयम रूपी साबुन से धोकर जीव आत्मा को निर्मल करे उसको निर्जरातत्त्व कहते हैं।

जघन्य निर्जरातत्त्व के मुख्य १२ भेद हैं जैसे १२ प्रकार का तप—

१ अनशन २ उणोदरी ३ भिक्षाचरी ४ रस परित्याग ५ कायाक्लेश ६ प्रतिसंलीनता यह छः प्रकार का बाह्यतप ७ प्रायश्चित्त ८ विनय ९ वैयावृत्य १० स्वाध्याय ११ ध्यान १२ व्युत्सर्ग। यह छः प्रकार का अभ्यन्तर का तप है।

अनशन के दो भेद—१ इत्वरिकाल—थोड़े समय का २ आयु कालआयुपर्यन्त का।

इत्वरिकाल के छः भेद—१ श्रेणि तप २ प्रतर तप ३ घन तप ४ वर्ग तप ५ वर्गावर्ग तप ६ प्रकीर्ण तप।

श्रेणि तप के १४ भेद—१ व्रत २ बेला ३ तेला ४ चौला ५ पंचोला ६ छौला ७ सतौला ८ अर्धमास ९ मास १० दो मास ११ तीन मास १२ चार मास १३ पांच मास १४ छः मास तप करे।

प्रतर तप के १६ भेद—व्रत बेला तेला चौला।
बेला तेला चौला व्रत।
तेला चौला व्रत, बेला।
चौला व्रत बेला तेला।

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

घण तप के ६४ भेद १६—व्रत १६ बेले १६ तेले, १६ चौले तप करे।

वर्ग तप के ४०९६ चार हजार छयानवें भेद हैं। जैसे—एक हजार चौबीस १०२४ व्रत एक हजार चौबीस १०२४ बेले एक हजार चौबीस १०२४ तेले एक हजार चौबीस चौले तप करे। एवं ४०९६ हुए।

वर्गावग तप के एक करोड़ सड़सठ लाख सत्तर हजार दो सौ सोलह भेद। (१६७७७२१६) अर्थात्–४१ एकता-लीस लाख चौरानवें हजार तीन सौ चार ४१९४३०४ प्रत ४१९४३०४ बेले ४१९४३०४ तेले ४१९४३०४ चौले। एवं १६७७७२१६ भेद।

वर्गतप और वर्गावर्ग तप चौथे आरे में किया जाता है। आज कल पंचम काल में आयुसंहनन की कमी होने से नहीं हो सकते।

आवकीण तप के १० भेद—१ नवकारसी २ पोरसी ३ दो पोरसी ४ एकासणा ५ एकलठाण ६ निविगई ७ आमिल ८ अभिग्रह ९ चरम पच्चखाण १० मुठीमुठी लस्सा आदि अनेक प्रकार का समावेश है। जिसमें आयु काल के ३ भेद–१ भत्त पच्चखाण संथारा २ इंगित मरण संथारा, ३ पादोप गमन संथारा।

भतपच्चखाण के ६ भेद—१ नगर के अन्दर करे। २ नगर के बाहिर करे। ३ कारण से करे। ४ बिना कारण से करे। ५ पराक्रम सहित करे। ६ पराक्रम रहित करे।

इंगितमरण के ७ भेद—१ नगर में करे २ नगर से बाहर करे ३ कारण से करे ४ बिना कारण से करे ५ परा क्रम सहित करे ६ पराक्रम रहित करे ७ भूमि की मर्यादा करे।

पादोपगमन के ५ भेद—१ नगर में करे २ नगर से बाहर

फरे ३ कारण से करे ४ बिना कारण से करे ५ हिलन चल नादि चेष्टा से रहित करे, काष्ठ शिलावत् एक स्थान में ही स्थित रहे।

उनोवरी के दो भेद—१ द्रव्य उनोवरी २ भाव उनोवरी।

द्रव्य उनोवरी के तीन भेद—१ आहार उनोवरी २ उपाधि उनोवरी ३ सिज्जा उनोदरी।

आहार उनोवरी के तीन भेद - पुरुष के ३२ कवल स्त्री के २८ कवल नपुंसक के २४ कवल।

पुरुष एक कवल छोड़े और एक तीस का आहार करे तो जघन्य उनोवरी एक तीस छोड़े एक का आहार करे तो उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी मध्यम उनोवरी।

स्त्री एक कवल छोड़े और २७ का आहार करे तो जघन्य उनोवरी और २७ छोड़े और एक का आहार करे तो उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी। मध्यम उनोवरी।

नपुंसक एक कवल छोड़े २३ का आहार करे तो जघन्य उनोवरी और २३ कवल छोड़े एक का आहार करे तो उत्कृष्ट उनोवरी। बाकी मध्यम उनोवरी।

उपाधि उनोवरी—मण्डोवगरण—अल्पपात्र आदि अल्प रक्खे।

सिज्जा उनोवरी—सिज्जा सकोच के करे, सोना बैठना फिरना आदि।

भाव उनोवरी के ८ भेद—१ अल्प क्रोध २ अल्प मान ३

भाव भिक्षाचरी के १८ भेद-तीन प्रकार की भायु की स्त्री १ बालक २ युवा ३ वृद्धा।

तीन प्रकार की भायु का पुरुष-१ बालक २ युवा ३ वृद्ध।

तीन प्रकार की भायु का नपुंसक-१ बालक २ युवा ३ वृद्ध।

१ अमुक वर्ण ११ अमुक संस्थान १२ अमुक वस्त्र १३ बैठे हों खड़े हों १४ सिर खुले हों ढके हो १५ भाभूषण सहित हों भाभूषण रहित हों।

रस परित्याग के १६ भेद—१ प्रणीत रस का त्याग करे २ भामिल करे ३ नीवी करे ४ भरस भाहार करे ५ विरस भाहार ६ भन्त भाहारे ७ पन्त भाहारे ८ लूह भाहारे ९ तुच्छ भाहारे १० भरस जीवी ११ विरसजीवी १२ भन्त जीवी १३ पन्त जीवी १४ लूह जीवी १५ तुच्छ जीवी १६ भायाम सित्थभोगे।

काया क्लेश के १६ भेद—१ ठाण भासन करे २ निसहि भासन करे ३ उक्कुड भासन करें ४ पद्म भासन करें ५ वीर भासन करें ६ समकड भासन करे। ७ दण्ड भासन करे ८ गोदुह भासन करे ९ भनुष भासन करे। १० थूक थूके नहीं ११ खाज करे नहीं १२ मल की बत्ती उतारे नहीं १३ शरीर की शुश्रुषा करे नहीं १४ शीत की वेदना सहे १५ धूप की तापना सहे १६ लोच भादिक की वेदना सहे।

प्रतिसंलीनता तप के चार भेद—१ इन्द्रिय प्रतिसंलीनता २ कषाय प्रतिसंलीनता ३ योग प्रतिसंलीनता ४ विवित्त सयना सनप्रतिसंलीनता।

इन्द्रिय प्रतिसंलीनता के ४ भेद—पाँचों इन्द्रियों के २३ विषय २४० विकार इनको गोप के रखे उदीरे नहीं उदय आवें तो निष्फल करे।

कषाय प्रतिसंलीनता के ४ भेद—क्रोध मान माया लोभ इनको गोप (उपशान्त) करके रखे उदीरे नहीं उदय आवें तो निष्फल करे।

योग प्रतिसंलीनता के ३ भेद—मन वचन काया का योग अशुभ प्रवर्तावे नहीं अशुभ प्रवर्त जावे तो निष्फल करे।

विवित्त सयणासण प्रतिसंलीनता के ३ भेद—स्त्री पशु नपुंसक रहित स्थान भोगे सेवे। उद्यानेसुवा १ आरामेसुवा २ सुसानेसुवा ३ सुन्नागारेसुवा ४ गृहेसुवा ५ गिरिआगारेसुवा ६ इत्यादि अठारह प्रकार का निर्दोष स्थान सेवन करे।

प्रायश्चित के १० भेद—१० दस प्रकार से आत्मा दोष लगाता है। १ कंदर्प से पीड़ित होकर दोष लगावे २ प्रमाद से दोष लगावे ३ अज्ञानपने से दोष लगावे ४ क्षुधा तृषा से पीड़ित होकर दोष लगावे ५ आपत्ति पड़ने पर दोष लगावे ६ भय से दोष लगावे ७ शंका से दोष लगावे ८ अकस्मात दोष लगावे ९ राग द्वेष के वश दोष लगावे १ परीक्षा के कारण दोष लगावे।

१ प्रकार से आलोचना करता हुआ दोष लगावे—१ कांपता कांपता आलोवे तो दोष लगावे २ अनुमान प्रमाण से आलोवे तो दोष लगावे ३ देखा हुआ आलोवे अनदेखा हुआ न आलोवे तो दोष लगावे ४ सूक्ष्म सूक्ष्म आलोवे बादर बादर न आलोवे तो दोष लगावे। ५ बादर बादर आलोवे सूक्ष्म सूक्ष्म न आलोवे तो दोष लगावे ६ गुप्त अप्रगट अव्यक्त शब्दों से आलोवे तो दोष लगावे ७ ऊँचे स्वर से आलोवे तो दोष लगावे ८ अनजान के आगे आलोवे तो दोष लगावे। ९ बहुता के आगे आलोवे तो दोष लगावे १ प्रायश्चित्त के पास आलोवे तो दोष लगावे।

१ गुणों का धारक आलोचना करता है।—१ जातिवान् २ कुलवान् ३ विनयवान् ४ ज्ञानवान् ५ दर्शनवान् ६ चारित्र वान् ७ क्षमावान् ८ वैराग्यवान् ९ पाँचों इन्द्रियों को दमने वाला १ अमाई अपच्छाताई प्रायश्चित लेकर पश्चाताप न करने वाला।

१ इस गुणों के धारक के पास आलोचना करनी चाहिये—१ आचारवन्त हो २ धारणावन्त हो ३ पांच व्यव हारों का ज्ञाता हो जैसे—आगमव्यवहार, सूत्रव्यवहार आज्ञा व्यवहार, धारणाव्यवहार जीतव्यवहार। ४ प्राय श्चित्त देकर शुद्ध करने की सामर्थ्य हो ५ लज्जा हटाने की सामर्थ्यता रखता हो ६ थोड़ा थोड़ा करके प्रायश्चित्त देवे ७ इस लोक और परलोक का भय दिखावे ८ आलोया हुआ दोष

प्रगट न करे ९ प्रियधर्मी होवे १२ दृढधर्मी होवे।

१० प्रकार का प्रायश्चित—१ आलोचना प्रायश्चित २ प्रतिक्रमण प्रायश्चित ३ तदुभय प्रायश्चित ४ विवेक प्रायश्चित ५ व्युत्सर्ग प्रायश्चित ६ तप प्रायश्चित ७ छेद प्रायश्चित ८ मूलप्रायश्चित ९ अनुठप्पा प्रायश्चित १० पाडञ्चिया प्रायश्चित

विनय के सात भेद १ ज्ञान विनय २ दर्शन विनय ३ चारित्र विनय ४ मन विनय ५ वचन विनय ६ काय विनय ७ लोकोपचार विनय।

ज्ञान विनय के ५ भेद—१ मति ज्ञानी की विनय करे २ श्रुत ज्ञानी की विनय करे ३ अवधि ज्ञानी की विनय करे ४ मनःपर्यव ज्ञानी की विनय करे ५ केवल ज्ञानी की विनय करे।

दर्शन विनय के दो भेद १ शुश्रूषा विनय २ अणच्चासायणा विनय।

शुश्रूषा विनय के १० भेद—१ गुरु आवे तो खड़ा होवे २ आसन बिछावे ३ चार प्रकार का निर्दोष आहार पानी लाकर देवे ४ गुरु की आज्ञानुसार बर्ते ५ वन्दना करे (गुणग्राम करे) ६ नमस्कार करे ७ सम्मान देवे ८ आवे तो स्वागत करे ९ रहें तो सेवा भक्ति करे १० जाय तो छोड़ने जावे।

अणच्चासायणाविनय के ४५ भेद—धर्मावतार अरिहन्त देव की विनय करे २ अरिहन्त प्ररूपित धर्म की विनय करे।

२ प्रकिरिये ३ प्रकक्कसे ४ प्रकडुवे ५ अनिट्ठुरे ६ प्रफरुसे ७ न्यायकारी ८ प्रच्छेदकारी ९ प्रभेदकारी १ प्रपरितावणकारी ११ प्रनुद्वेगकारी १२ प्रभूग्रोवघाइये ।

प्रप्रशस्त मन विनय के १२ भद-जैसम नैसावज्जे २ सकिरिये ३ सककसे ४ सकडुवे ५ निट्ठुरे ६ फरुस ७ प्रन्यायकारी छेदकारी ९ भेदकारी १ परितावणकारी ११ उद्वेगकारी १२ भूग्रावघाइये ।

वचन विनय के दो भेद—१ प्रशस्त वचन विनय २ प्रप्रशस्त वचन विनय ।

प्रशस्त वचने विनय क १२ भद—जे वचन प्रसावज्जे २ प्रकिरिये ३ प्रककक्से ४ प्रकडुवे ५ प्रनिट्ठुरे ६ प्रफरुसे ७ न्यायकारी ८ प्रछेदकारी ९ प्रभेदकारी १ प्रपरितावण कारी ११ प्रनुद्वेगकारी १२ प्रभूप्रोवघाइये ।

प्रप्रशस्त वचन विनय के १२ भेद-१ जे वचने सावज्जे २ सकिरिये ३ सकक्कसे ४ सकडुव ५ सनिट्ठुरे ६ सफरुस ७ प्रन्यायकारी ८ छेदकारी ९ भेदकारी१ ० परितावणकारी ११ उद्वेगकारी १२ भूग्रोवघाइये ।

काया विनय क दो भद १ प्रशस्त काया विनय २ प्रप्रशस्त काया विनय ।

प्रशस्त काया विनय के ७ भद-१ उपयोग से चलना २ उपयोग से खड़े होना ३ उपयोग से बैठना ४ उपयोग से सोना ५ उपयोग से किसी चीज को उलंघना ६ उपयोग स

२ मकिरिये ३ मकक से ४ मकडुव ५ मनिन्ठुरे ६ मफस्से ७ ग्यायकारी ८ मच्छेदकारी ९ ममेदकारी १० मपरितावणकारी ११ मनुद्वेगकारी १२ ममूघोवघाइये ।

मप्रशस्त मन विनय के १२ भेद-जमम नेसावज्जे २ मकिरिय ३ सककसे ४ सकडुवे ५ निट्ठुरे ६ फरसे ७ मन्यायकारा ८ छेदकारी ९ भेदकारी १० परितावणकारो ११ उद्वेगकारी १२ भूभोवघाइय ।

वचन विनय के दो भेद—१ प्रशस्त वचन विनय २ मप्रशस्त वचन विनय ।

प्रशस्त वचन विनय के १२ भेद—जे वचन मसावज्जे २ मकिरिये ३ मककस ४ मकडुव ५ मनिट्ठुरे ६ मफरस ७ ग्यायकारी ८ मच्छेदकारी ९ ममेदकारी १० मपरितावण कारी ११ मनुद्वेगकारी १२ ममूघोवघाइय ।

मप्रशस्त वचन विनय के १२ भेद-१ जे वचने सावज्ज २ सकिरिय ३ सककसे ४ मकडुव ५ मनिट्ठुरे ६ मफरस ७ मन्यायकारी ८ छेदकारी ९ भेदकारी १० परितावणकारी ११ उद्वेगकारी १२ भूभोवघाइये ।

काया विनय के दो भेद १ प्रशस्त काया विनय २ मप्रशस्त काया विनय ।

प्रशस्त काया विनय के ७ भेद-१ उपयोग से चलना २ उपयोग से खड़े होना ३ उपयोग से बैठना ४ उपयोग से सोना ५ उपयोग से किसी चीज को उलंघना ६ उपयोग से

पसचना पीछे माना) ७ उपयोग से पाँचों इन्द्रियों को रागादि से बचा कर वश में करना ।

अप्रशस्त काया विनय के ७ भेद—१ बिना उपयोग चलना २ बिना उपयोग खड़ा होना ३ बिना उपयोग बैठना ४ बिना उपयोग सोना ५ बिना उपयोग किसी चीज को उलंघना ६ विना उपयोग पीछे हटना ७ बिना उपयोग इन्द्रियों को खुले रूप से रागादि में वर्तना ।

लोकोपचार विनय के ७ भेद—१ गुरुजनों के निकट रहना २ उन की इच्छानुसार अनुसरण करना ३ पूर्व उपकार को मान कर उपकार करना ४ ज्ञान आदि के फल की इच्छा से आचार्य आदि का कार्य करना ५ दुखी-रोगादि से पीड़ित की सेवा का विचार रखना ६ देश काल का ज्ञान रखना ७ सर्व अर्थों में अनुकूल रहना ।

वियावच्च के १० भेद—१ आचार्य की वियावच्च करे २ उपाध्याय की वियावच्च करे ३ स्थविर की वियावच्च करे ४ कुल की वियावच्च करे ५ गण की वियावच्च करे ६ सघ की वियावच करे ७ नये दीक्षित की वियावच्च करे ८ रोगी की वियावच्च करे ९ तपस्वी की वियावच्च करे १ स्वधर्मी की वियावच्च करे ।

स्वाध्याय के ५ भेद—१ वाचना २ पूछना ३ पर्यटना ४ अनुपेहा ५ धर्म कथा ।

ध्यान के ४ भेद—१ आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान ।

आर्तध्यान के ८ भेद—४ पाए ४ लक्षण

चार पाये—१ अमनोगम शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श का

वियोग वांछे तो आर्त्तध्यान १। मनोगम शब्द रूप गंध रस स्पर्श का संयोग वांछे तो आर्त्तध्यान २। रोगादि कष्टों में आकुल व्याकुल अधीर हो कर कष्टों का वियोग वांछे आर्त्तध्यान ३। काम भोग का संयोग वांछे तो आर्त्तध्यान ४।

४ लक्षण—कंदणिया—आक्रंद शब्द से रोना। २ सोयणिया—साथ फ़िकर में लीन होना। ३ तीप्पणिया—आंसुओं का गिरना। ४ पीटणिया—रोने के साथ मस्तक छिर छाती आदि पीटना।

रौद्रध्यान के ८ भेद। ४ पाये ४ लक्षण।

चार पाए—१ हिंसानुबन्धी-हिंसा करने में प्रसन्न रहे। २ मोसानुबन्धी—झूठ बोलने में प्रसन्न रहे। ३ स्तेनानुबन्धी—चोरी करने में खुश रहे। ४ सारक्खणाणुबन्धी—दूसरे को कष्ट में फसा कर प्रसन्न होवे।

चार लक्षण—१ ओसन्नदोष—थोड़ी सी बात पर बहुत रोष करना। २ बाहुल्यदोषे—थोड़ी सी बात पर बहुत दुःख मनावे ३ अनाण दोष—अज्ञान के वश में होकर द्वेष करे। ४ आम रणान्तदोषे—आमृत्युपर्यन्त द्वेष न छोड़े।

धर्मध्यान के १६ भेद ४ पाये ४ लक्षण ४ आलंबन ४ अनुप्रेक्षा।

चार पाये—१ आणाविजए—वीतराग देव की आज्ञानुसार चलने का उपयोग रक्खे। २ अवायविजय—कर्म आने के स्थान और कारणों को जाने ३ विपाक विजए—कर्मविपाक फल विचारे। ४ संठान विजए—लोक स्वरूप विचारे।

चार लक्षण—१ आणारुचि—आज्ञा पालन से रुचि रक्खे २ निसर्ग रुचि—जाति स्मरण आदि ज्ञान से धर्म की रुचि

पगपगना पीछे धाना) ७ उपयोग से पाँचों इन्द्रियों को शब्दादि से बचा कर वश में करना ।

अप्रशस्त काया विनय के ७ भेद—१ बिना उपयोग चलना २ बिना उपयोग खड़े होना ३ बिना उपयोग बैठना ४ बिना उपयोग सोना ५ बिना उपयोग किसी चीज को उलंघना ६ बिना उपयोग पीछे हटना ७ बिना उपयोग इन्द्रियों को खुले रूप से रागादि में वर्तना ।

लोकोपचार विनय के ७ भेद—१ गुरुजनों के निकट रहना २ उन की इच्छानुसार अनुसरण करना ३ पूर्व उपकार को मान कर उपकार करना ४ ज्ञान आदि के फल की इच्छा से आचार्य आदि का कार्य करना ५ दुःखी-रोगादि से पीड़ित की सेवा का विचार रखना ६ देश काल का ज्ञान रखना ७ सब अर्थों में अनुकूल रहना ।

वियावच्च के १० भेद—१ आचार्य की वियावच्च करे २ उपाध्याय की वियावच्च करे ३ स्थविर की वियावच्च करे ४ कुल की वियावच्च करे ५ गण की वियावच्च करे ६ संघ की वियावच्च करे ७ नये दीक्षित की वियावच्च करे ८ रोगी की वियावच्च करे ९ तपस्वी की वियावच्च करे १० स्वधर्मी की वियावच्च करे ।

स्वाध्याय के ५ भेद—१ वाचना २ पूछना ३ पर्यटना ४ अनुपेहा ५ धर्म कथा ।

ध्यान के ४ भेद—१ आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान ।

आर्तध्यान के ८ भेद—४ पाए ४ लक्षण

चार पाये-१ अमनोगम शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श का

बने। ३ मज्जवे—सरल बने माया कपट त्यागे। ४ मद्दवे—मद को त्याग कर कोमल प्रणामी (विनयी) बने।

चार अणुप्पेहा (विचार)—१ अनिच्चाणुप्पेहा—संसार की अनित्यता चिन्ते (विचारे)। २ विप्परिणामाणुप्पेहा—पुद्गल (प्रकृति) अनित्य परिवर्तनशील हैं। ३ असुभाणुप्पेहा—कर्मों का फल अशुभ है। ४ अवायाणुप्पेहा—जीवात्मा अकम्पित है अर्थात् छेदन भेदन नहीं हो सकती।

व्युत्सर्ग के २ भेद

१ द्रव्य व्युत्सर्ग २ भाव व्युत्सर्ग।

द्रव्य व्युत्सर्ग के ४ भेद—१ शरीर व्युत्सर्ग २ उपाधि व्युत्सर्ग ३ गुण व्युत्सर्ग ४ भक्तपान व्युत्सर्ग।

भावव्युत्सर्ग के तीन भेद—१ संसार व्युत्सर्ग २ कर्म व्युत्सर्ग ३ कषाय व्युत्सर्ग।

इति निर्जरातत्त्व समाप्त।

८ बन्धतत्त्व

बन्धतत्त्व किसे कहते हैं?

शुभाशुभ योगों से कर्मरूपी लेश्याओं द्वारा आत्मप्रदेशों के ऊपर आठ कर्मों को अवरक की तकोही की तरह या कपड़ा गीली दानों पर चाव की चासनी चढ़ाने की तरह कर्म वर्गणा जमाती है। अर्थात्—आत्मा जिन भावों से कर्म वर्गणाओं को खेंचती है, वह कर्म पुद्गल दूध पानी हुए आत्मा से कर्मों के साथ

मिलकर आत्मप्रदेशों पर ठहर जाते हैं उन्हें भावकर्म कहते हैं।

और कर्मों का गाढ बन्धरूप होकर आत्मप्रदेशों पर जम जाने को द्रव्य बन्ध कहते है। इसलिए इसको बन्धतत्त्व कहते हैं।

बन्धतत्त्व के मुख्य ४ भेद है—१ प्रकृतिबन्ध—जो कर्म बनते हैं उनमें अपने काम करने का स्वभाव पड़ना। २ प्रदेशबन्ध—जो कर्म जिस प्रकृति में बंधे उनमें वर्गणाओं की संख्या होना। ३ स्थितिबन्ध—कर्मों का बन्ध समय की अवधि (मर्यादा) के लिये होना। ४ अनुभागबन्ध—फल देते समय कर्मों को तीव्र या मन्द फल होना।

मन वचन काया के योगों के निमित्त से आत्मा पहले तो बन्ध करती है और क्रोधादि कषायों की तीव्र या मन्दता के अनुसार स्थिति बन्ध पड़ते हैं।

१ प्रकृतिबन्ध १ मूल आठ कर्मों की १४८ प्रकृति।

ज्ञानावरणीय की ५ प्रकृति—१ मति ज्ञानावरणीय २ श्रुत ज्ञानावरणीय ३ अवधि ज्ञानावरणीय ४ मनःपर्ययज्ञानावरणीय ५ केवलज्ञानावरणीय।

दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृति—१ चक्षु दर्शनावरणीय २ अचक्षु दर्शनावरणीय ३ केवलदर्शनावरणीय ४ अवधिदर्शना वरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानगृद्धि।

वेदनीय कर्म की दो प्रकृति—१ सातावेदनीय २ असा तावेदनीय।

मोहनीयकर्म[1] की २८ प्रकृति जिसके दो भेद–१ चारित्र मोहनीय २ सम्यक्त्व मोहनीय।

चारित्रमोहनीय की २५ प्रकृति जो कि पापतत्त्व में था चकी है।

और सम्यक्त्व मोहनीय की ३ प्रकृति–१ मिथ्यात्व मोहनीय २ सम्यक्त्वमोहनीय ३ मिश्रमोहनीय।

आयुष्कर्म की ४ प्रकृति—१ नरक की आयुष २ तिर्यंच की आयुष ३ मनुष्य की आयुष ४ देवता की आयुष।

नाम कर्म की ९३ प्रकृति जिस में ३७ प्रकृति पुण्यतत्त्व में है और ३४ प्रकृति पापतत्त्व में। यह ७१ हुई। बाकी २२ प्रकृति इस प्रकार हैं।

१ बन्धन ५ संघातन २० बोल वर्ण गन्ध, रस, स्पर्श के। इनमें से ८ बोल पुण्य और पापतत्त्व में से छोड़ दवें। बाकी रही बाईस। ३७ ३४ और २२ सब मिलकर नाम कम की ९३ प्रकृति हुई।

गोत्र कर्म की २ प्रकृति–१ नीचगोत्र २ ऊंचगोत्र।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति–१ दानान्तराय २ लाभांतराय ३ भोग अन्तराय ४ उपभोग अन्तराय ५ बलवीर्य[1] अन्तराय। ज्ञानावरणी की ५—दर्शना वरणी की ९ वेदनीय की २—मोहनीय की २ –आयु की ४–नाम की ९३ गोत्र की २–अन्त राय की ५। इस प्रकार आठों कर्मों की सब मिलकर १४८ प्रकृति हुई।

६ प्रदेशबन्ध

आठों कर्मों के दल का समूह तथा आत्मा के प्रदेशों के ऊपर आठों कर्मों की अनन्त वर्गणा अर्थात् एक एक

धमियाये ३ ज्ञान अन्तराएण ४ ज्ञान प्रदोषेण ५ ज्ञान अच्चा सायणाये ६ ज्ञानविसंवाद योगेण ।

ज्ञानावरणीय कम १० प्रकार से भोगा जाता है १ सोया बन्ने २ सोयाविनानाबन्ने ३ नेताबन्ने ४ नेताविनानाबन्ने ५ घाणाबन्ने ६ घाणाविनानाबन्ने ७ रसाबन्ने ८ रसाविनानाबन्ने ९ फासाबन्ने १० फासाविनानाबन्ने ।

दर्शनावरणीय कम का ६ प्रकार से बन्ध पड़ता है—१ दर्शन पडिनियाये २ दर्शननिह्नवनियाये ३ दर्शन अन्तराएण ४ दर्शन प्रदोषेण ५ दर्शन अच्चासा यणाए ६ दर्शनविसंवादयोगेण ।

२ दर्शनावरणीयकम ९ प्रकार से भोगा जाता है—१ चक्षु दर्शनावरणीय २ अचक्षु दर्शनावरणीय ३ अवधि दर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानगृद्धि निद्रा ।

सातावेदनीय कर्म जीव १० प्रकार से बांधते हैं —

१ पाणानुकंपनीयाय २ भूयानुकम्पनीयाय ३ जीवा नुकम्पनीयाय ४ सत्तानुकम्पनीयाय ५ अदुःखणियाये ६ असो यणियाय ७ अभूरणियाय ८ अतिपनियाए ९ अपिट्टनियाय १ अपरितावणियाय ।

सातावेदनीय कम जीव ८ प्रकार से भोगते हैं—

१ मनोगमशब्द २ मनोगम रूप ३ मनोगम गन्ध ४ मनोगम रस ५ मनोगम स्पर्श ६ मन को सुखदाई ७ वचन को सुखदाई ८ काया को सुखदाई ।

असातावेदनीय कर्म जीव १२ प्रकार से बांधते हैं—

१ प्राणभूतजीव सतावे इनको दुःख नियाय २ सोयणि याय ३ झूरणियाय ४ तिप्प नियाय ५ पिट्टणियाय ६ परिता पनियाय ७ बहु दुःखनियाय ८ बहुसोयनियाय ९ बहुझूरणि-याय १ बहुतिप्पनियाय ११ बहुपिट्टणनियाय १२ बहुपरिता-पनियाय।

असातावेदनीय कर्म ८ प्रकार से भोगते हैं—

१ अमनोगम शब्द २ अमनोगम रूप ३ अमनोगम गन्ध ४ अमनोगम रस ५ अमनोगम स्पर्श ६ मन को दुःख दाई ७ वचन को दुःखदाई ८ काया को दुःखदाई।

मोहनीय कर्म ६ प्रकार से बांधता है—

१ तिव्वकोहे २ तिव्वमाने ३ तिव्वमाये ४ तिव्वलोभे ५ तिव्वदर्शनमोहनीय ६ तिव्वचारित्रमोहनीय।

मोहनीय कर्म जीव ५ प्रकार से भोगते हैं—

१ मिथ्यात्व मोहनीय २ मिश्र मोहनीय ३ सम्यक्त्व मोहनीय ४ कषाय मोहनीय ५ नोकषाय मोहनीय

आयु कर्म १६ प्रकार से बांधा जाता है।

चार प्रकार से नरक की आयुष्य बांधी जाती है—

१ महा आरंभिया २ महापरिग्रहिया ३ कुणय आहारे ४ पचेन्द्रिय वध।

चार प्रकार से तिर्यंच की आयुष्य बांधी जाती है—

१ माया करने से २ माया में माया करने से ३ खोटा

तोल खोटा माप करने से ४ मलिन वयन-अपना दोष दूसरों के सिर लगाने से अर्थात् झूठ बोलने से।

चार प्रकार से मनुष्य की आयु बांधी जाती है—

१ प्रकृति भद्दियाए २ प्रकृति विनयाए ३ साणुक्कोसाए ४ अमच्छरियाए।

चार प्रकार से देवता की आयु बांधी जाती है—

१ सराग संयम पालने से २ संयमासंयम से ३ बाल तप से अकाम निर्जरा से।

आयुष्कर्म जीव ४ प्रकार से भोगता है—

१ नरक गति में २ तिर्यञ्च गति में ३ मनुष्य गति में ४ देव गति में।

नाम कर्म आठ प्रकार से बांधा जाता है
चार प्रकार से शुभ नाम कर्म बांधा जाता है—

१ काय उज्जुए २ भाव उज्जुए ३ भासा उज्जुए ४ अवि समवाय जोगेण।

१४ प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है—

१ इष्ट शब्द २ इष्ट रूप ३ इष्ट गन्ध ४ इष्ट रस ५ इष्ट स्पर्श ६ इष्ट गति ७ इष्ट स्थिति ८ इष्ट यशःकीर्ति १० इष्ट उट्ठाण कम बलवीर्य पुरुषाकार ११ इष्ट स्वर १२ कान्त स्वर १३ प्रिय स्वर १४ मनोज्ञ स्वर।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकार से बांधा जाता है—

१ काया अणउज्जुए २ भाव अणउज्जुए ३ भासा अणउज्जुए ४ विसमवायजोगेण।

अशुभ नाम जीव १४ प्रकार से भोगते हैं

१ अनिष्ट शब्द २ अनिष्ट रूप ३ अनिष्ट गन्ध ४ अनिष्ट रस ५ अनिष्ट स्पर्श ६ अनिष्ट गति ७ अनिष्ट स्थिति ८ अनिष्ट लावण्य ९ अयश-कीर्ति १० अनिष्ट उठाव कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रमेण ११ अनिष्ट स्वर १२ अकांत स्वर १३ दीन हीन स्वर १४ अमनोज्ञ स्वर।

गोत्र कर्म १६ प्रकार से बांधा जाता है—

आठ प्रकार का मद करने से नीच गोत्र बांधा जाता है—

१ जातिमद २ कुलमद ३ बलमद ४ रूपमद ५ तपमद ६ लाभमद ७ सूत्र (शास्त्र) विद्यामद ८ ऐश्वर्यमद यह आठ मद करने से जीव नीच गोत्र में पैदा होता है।

आठ प्रकार से भोगता है—

१ जाति हीन २ कुल हीन ३ बल हीन ४ रूप हीन ५ तप हीन ६ लाभ हीन ७ सूत्र शास्त्र हीन ८ ऐश्वर्य हीन।

आठ मद न करे तो जीव ऊंच गोत्र बांधता है—

१ जाति मद न करे २ कुल मद न करे ३ बल मद न करे ४ रूप मद न करे ५ तप मद न करे ६ लाभ मद न करे ७ सूत्र शास्त्र मद न करे ८ ऐश्वर्य मद न करे।

आठ प्रकार से भोगा जाता है—

१ जाति श्रेष्ठ २ कुल श्रेष्ठ ३ बल श्रेष्ठ ४ रूप श्रेष्ठ ५ तप श्रेष्ठ ६ लाभ श्रेष्ठ ७ शास्त्र श्रेष्ठ ८ ऐश्वर्य श्रेष्ठ।

अन्तराय कर्म ५ प्रकार से जीव बांधते हैं—

१ दान अन्तराय २ लाभ अन्तराय ३ भोग अन्तराय ४ उपभोग अन्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय । यह ५ प्रकार की अन्तराय किसी को देवे तो अन्तराय कर्म भोगना पड़े ।

यदि किसी को अन्तराय न देवे तो नहीं भोगना पड़े ।

इति बन्धतत्त्व समाप्त

९ मोक्षतत्त्व

मोक्षतत्त्व किसे कहते हैं ?

जब मिथ्याज्ञान मिथ्यादर्शन मिथ्याचारित्र के निराकरण करने का अर्थात् छोड़ने का कारण मिलता है और अव्रत कषाय प्रमाद अशुभ योग कर्म बन्ध के कारण रुक जाते हैं और बन्धे हुए कर्मों की निर्जरा हो जाती है तब जीवात्मा सूक्ष्म और स्थूल शरीर से छुटकारा पाकर कममल से रहित पूर्ण शुद्ध होकर, अन्तिम शरीर की अवगाहना से कुछ कम (तीसरा भाग कम) आत्म प्रदेशों की अवगाहनायुक्त ऊर्ध्व लोकाकाश के अन्त में सिद्ध क्षेत्र पर सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा सिद्ध स्वरूप अनन्त सुख युक्त अनन्त शक्तिवान् अतीन्द्रिय ध्रुव आनन्द में सदा मग्न रहते हैं जन्म मरण जरा आधि व्याधि शारीरिक मानसिक सर्व प्रकार के कष्टों से रहित निर्वाण अवस्था में सदा के लिये निराकुल वा परम कृतकृत्य हो जाते हैं उस मोक्ष तत्त्व कहते हैं ।

१५ प्रकार से सिद्ध होते हैं

१ तीर्थ सिद्ध २ अतीर्थ सिद्ध ३ तीर्थंकर सिद्ध ४

अतीर्थंकर सिद्धा ६ गृहस्थलिंगसिद्धा ७ अन्यलिंगसिद्धा ८ स्वलिंगसिद्धा ९ स्त्रीलिंगसिद्धा ९ पुरुषलिंगसिद्धा १० नपुंसकलिंगसिद्धा ११ स्वयं बुद्ध सिद्धा १२ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा १३ बुद्धबोहि सिद्धा १४ एक सिद्धा १५ अनेक सिद्धा एवं सिद्ध १५।

चार प्रकार से जीव मोक्ष में जाते हैं—

१ सम्यक ज्ञान २ सम्यक दर्शन ३ सम्यक चारित्र ४ सम्यक निर्वासना तप करने से। ज्ञान दर्शन चारित्र तप ॥४॥

नौ द्वार

१ सत्तापदपरूपणाद्वार २ द्रव्य प्रमाणद्वार ३ क्षेत्रप्रमाण द्वार ४ स्पर्शनाद्वार ५ कालद्वार ६ भागद्वार ७ भावद्वार ८ अल्प द्वार ९ अल्पा बहुत्वद्वार।

सत्ता पदरूपणा के १० भेद—१ चार गति में से मनुष्य को मोक्ष है, तीन को नहीं २ पांच जाति में से पंचेन्द्रिय को मोक्ष चार को नहीं ३ छः काया में त्रस को मोक्ष पांच को नहीं ४ सन्नी को मोक्ष असंज्ञी को नहीं ५ भव्य को मोक्ष अभव्य को नहीं ६ अनाहारी को मोक्ष, आहारी को नहीं ७ पांच सम्यक्त्व में से क्षायिक सम्यक्त्व को मोक्ष चार को नहीं।

५ सम्यक्त्व के नाम

१ उपशम सम्यक्त्व २ सास्वादान सम्यक्त्व ३ क्षयोपशम सम्यक्त्व ४ वेदक सम्यक्त्व ५ क्षायिक सम्यक्त्व।

८ पाँच ज्ञानों में से केवल ज्ञानी को मोक्ष चार को नहीं। ६ चार दर्शन में से केवल दर्शनी को मोक्ष तीन को नहीं। १० पाँच चारित्र में से यथाख्यायिक चारित्री को मोक्ष चार को नहीं।

द्रव्य से २–सिद्ध अनन्ते।

क्षेत्र से —लोक के असंख्यातवें भाग में सिद्ध भगवान् सच्चिदानन्द स्वरूप विराजमान हैं।

स्पर्शना ४–लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्शते हैं।

काल से ५–एक एक सिद्ध की अपेक्षा आदि है अन्त नहीं।

बहुत व अनन्त सिद्धों की अपेक्षा आदि अन्त नहीं।

भागद्वार ६–तेईस दण्डक के जीवों से सिद्ध अनन्त गुण अधिक हैं। और वनस्पति की अपेक्षा से सिद्ध अनन्त गुण न्यून थोड़े हैं।

भावद्वार ७–सिद्धों में दो भाव क्षायिक भाव पारिणामिक भाव होते हैं।

अन्तरा द्वार ८–केवल ज्ञान केवल दर्शन का अन्तरा नहीं सिद्धों ने फिर संसार के चक्र में आना नहीं। जहाँ एक सिद्ध है वहाँ अनन्त सिद्ध हैं। जहाँ अनन्त सिद्ध हैं वहाँ एक सिद्ध है। सिद्धों सिद्धों में अन्तर नहीं।

अल्पाबहुत द्वार ९–सब से थोड़े नपुंसक लिंग सिद्धा।

२ स्त्रीलिंग सिद्धा सख्यात गुणा ३ पुरुषलिंग सिद्धा संख्यात गुणा।

एक समय में नपु सक १० सीझे। स्त्री २० सीझे। पुरुष १०८ सीझे।

३२—१२ आठ समय तक सीझे। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

३२ से ४८ तक सात समय सीझे। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

४९ से ६ तक छ समय सीझे। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

६१ से ७२ तक ५ समय सीझें। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

७३ से ८४ तक ४ समय सीझें। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

८५ से ९६ तक ३ समय सीझें। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ३ मास का।

९७ से १ २ तक २ समय सीझें। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

१ ३ से १ ८ तक १ समय सीझे। उपरान्त विरह पड़े तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का। इसी तरह सर्व बोलों में समझ लेना।

इन चौदह गुणों वाले जीव मोक्ष में जाते हैं।

१ त्रसपणे २ नरपणे ३ सत्रीपणे ४ भवी प्रथम

नाराच संघयण वाला ५ शुक्लध्यानी ६ मनुष्य गति ७ क्षायिक ८ सम्यक्त्वी ९ यथाख्यातिक चारित्रवाला पंडित वीर्य १ केवलज्ञानी ११ केवलदर्शनीय १ भव्यसिद्धिक १३ परम शुक्ललेश्यी १४ चरम शरीरी।

जघन्य दो हाथ की अवगाहना वाला १ उत्कृष्टी ५०० धनुष की अवगाहना वाला जघन्य ९ वर्ष की आयु वाला उत्कृष्ट पूर्व क्रोड की आयु वाला कर्मभूमि के मनुष्य मोक्ष में जाते हैं और नहीं।

इति नवतत्त्व समाप्त

आहार पानी के ४२ दोष

१६ सोलह उद्गम के दोष

आहाकम्मे उद्देसिय-पूई कम्मेमिस्सी आये। ठवणां पाहुडियाय-पाओ अरकायपामिच्चे। परियट्टे अभिहड-उभिन्नमालोहड अच्छिज्ज अणिसिट्टे अज्झोयरगो मोलसम् पिंडगम्म दोसा ॥२॥ इति।

१ आहाकम्मे (आधाकर्मी) साधु के निमित्त बना हुआ आहार लेवे तो दोष।

२ उद्देसिय (उद्देशिक) जिस साधु के निमित्त आहार बना हो वही साधु लेवे तो आधाकर्मी। अन्य-और साधु लेव तो उद्देशिक दोष लगे।

३ पूइकम्मे (पूति कर्म) निर्दोष आहार में आधाकर्मी आहार की मिलावट होवे वह आहार लेवे तो पूतिकर्म दोष लगे ।

४ मिस्सोजाय (मिश्रित) जो गृहस्थ अपने और साधु, दोनों के लिये बनावे वह आहार लेवे तो मिश्रित दोष लगे ।

५ ठवणा (स्थापना) साधु के ही निमित्त स्थापन करके रखे और किसी को न देवे वह आहार लेवे तो स्थापना दोष लगता है ।

६ पाहुडियाए (प्राभृतिक) अतिथि के निमित्त जो भोजन हो वह पाका होने पर उसे अतिथि को देने से पहले लेवे तो दोष ।

७ पाओर (प्रादुष्करण) अंधेरे में दीवा बैटरी बिजली आदि का प्रकाश करके देवे ऐसा आहार लेवे तो दोष ।

८ कीय (क्रीत) साधु के निमित्त मोल लिया हुआ आहार लेवे तो दोष ।

९ पामिच्चे (अपमित्य) साधु के निमित्त उधारा लिया हुआ हो वह आहार लेवे तो दोष ।

१ परियटिय (परिवर्तित) साधु के निमित्त अपना आहार देकर अन्य से और किसी प्रकार का आहार लेवे उसी आहार को साधु लेवे तो दोष ।

११ अभिहडे (अभिहृत) साधु के निमित्त सम्मुख रास्ते में या उपाश्रय में आहार लावे उसे लेवे तो दोष ।

१२ उबभिन्ने (उदभिन्न) लेपन करके बन्द किया हुआ फुड़वा कर लेवे तो दोष ।

१३ मालाहडे (मालापहृतं) ऊंची नीची तिर्छी विषम जगह में रक्खा हुआ आहार लेवे तो दोष क्योंकि दाता को कष्ट का कारण है।

१४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य) निबल से छीन कर दिलावे वह आहार लवे तो दोष।

१५ अनिसिट्ठ (अनिसृष्ट) दो मनुष्यों का साझ का आहार उन दोनों की मरजी के बिना लेवे तो दोष।

१६ अज्झोयरे (अध्यवपूर्वक) आहार थोड़ा होने के कारण साधु के निमित्त उसमे और आरम्भ करके मिला कर देवे जैसे—थोड़ी खाख है और उसमें पानी मिला कर अधिक बना दो ऐसे भोजन को लेवे तो दोष।

इति १६ उदगम दोष समाप्त।

१६ उत्पादन के दोष

धाइदूई-निमित्ते-अजीवे वणी मग तिगिच्छाय।
कोहे माणे माया लोभे ये हवंति दस दोसा ॥३॥
पुव्वं पच्छासंथुवा, विज्जामंते चुएण जोग।
उपयनाए दोसा, सोलसमम्मेमूल कम्मे ॥४॥

१ धाई (धात्री) धाय माता की तरह किसी के बच्चों को खिला करके आहार लेवे तो दोष।

२ दूई (दूती दूतपने का काम करके आहार लेवे तो दोष।

३ निमित्ते (निमित्त) भूत भविष्यत् वर्तमान आदि निमित्त ज्योतिष बता करके आहार लेवे तो दोष।

४ भाजीवे (भाजीविका) अपनी जाति बता करके भाहार लेवे तो दोष।

५ वणीमग्गे (वनीपक) रङ्क भिखारी की तरह दीन बन कर भाहार लेवे तो दोष।

६ तिगिच्छाय (चिकित्सा) वैद्य की तरह चिकित्सा करके भाहार लेव तो दोष।

७ कोहे (क्रोध) क्रोध करके भाहार लेवे तो दोष।

८ माण (मान) करके भाहार लेव तो दोष।

९ माया दगाबाजी) कपट से भाहार लेवे तो दोष।

१० लोभे (लोभ) लोभ से अधिक भाहार लेवे तो दोष।

११ पुव्वि पच्छासंथुया (पूर्व पश्चात संस्तव) भाहार के निमित्त भाहार लेने से पहले या भाहार लेने के बाद दानी की स्तुति करे तो दोष।

१२ विज्जा (विद्या) जिससे देवी सिद्ध की जाय ऐसी विद्या बता के भाहार लेवे तो दोष।

१३ मन्ते (मन्त्र) जिससे देवता सिद्ध किया जाए ऐसे मन्त्र बताके भाहार लेवे तो दोष।

१४ चुण्णा (चूर्ण) भूरण तन्त्र भादि बता के भाहार लेवे तो दोष।

१५ जोगे (योग) विषय भादि कुसंयोग दुरात्माओं का संयोग मिलाकर भाहार लेव तो दोष।

१६ मूलकम्मे (मूलकर्म) गर्भपात कराने की औषधि आदि बता कर आहार लेवे तो दोष।

१६ उत्पादन के दोष समाप्त।

१० एषणा के दोष

संकियमक्खियनिक्खित्त, पिहिय साहरिय दायगुम्मिस्से।
अपरिणयलित्त छड्डिय, एसणा दोसा दस हवंति ॥५॥

१ संकिये (शंकित) गृहस्थी तथा साधु को शंका हो जाने पर फिर भी वही आहार लेवे तो दोष।

२ मक्खिये (म्रक्षित) सचित्त पानी से हाथ या शरीर का कोई अंग भीगा होवे उसके हाथ से आहार लेवे तो दोष।

३ निक्खित्त (निक्षिप्त) सचित्त वस्तु पर अचित्त वस्तु पड़ी होवे उसे हटा के लेवे तो दोष।

४ पिहिये (पिहित) अचित्त वस्तु सचित्त से ढकी हुई होवे उसे हटाकर लेवे तो दोष।

५ साहरिये (संहृत) निर्दोष वस्तु सचित्त के साथ लगी हुई हो उसे अलग करके देवे तो दोष।

६ दायग (दायक) देने वाला रोगी या अन्धा लंगड़ा या अनजान हो यदि उसे वस्तु देने से कष्ट हो मालिक होवे वा उसका नहीं ऐसा यदि लेवे तो दोष।

७ उम्मिस्स (उन्मिश्र) सचित्त अचित्त मिली हुई वस्तु लेवे तो दोष।

८ अपरिणाये (अपरिणत) पूर्ण शस्त्र परिणम्या बिना अर्थात् अचित्त हुए बिना सेवे तो दोष।

९ लित्त (लिप्त) थोड़े समय की (तत्काल की) लेपन की हुई भूमि पर आ करके आहारादि सेवे तो दोष।

१ छडिय (छर्दित) गिरता पड़ता हुआ आहार लेवे तो दोष।

१० एषणा के दोष समाप्त।

५ मांडले के दोष

मत्तोपणापमाणे इ गालधूम कारणे पढमासमिय बाहिर तरवा ॥६॥

६ कारण से आहार का सेवन करें।

वेयण वेयावच्चे इरिय ट्ठाये सजमट्ठाय।
तहपाणवत्तियाए छट्ठ पुणधम्मचिंताए ॥७॥

६ कारण से आहार का परित्याग करे

आयंके उपसग्गो तितिक्खयार्बंभ चेरगुत्तिसु।
पाणीदया तवहेउ शरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥८॥

इति आहार पाणी के ४२ दोष समाप्त।

छब्बीस द्वार

जीव का देवताओं में तीन शरीर होते हैं—

१ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण।

वायुकाय को छोड़ कर चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च और असंज्ञी मनुष्य में तीन शरीर-१ औदारिक २ तेजस ३ कार्मण।

वायुकाय संज्ञी तिर्यञ्च मानुषी में चार शरीर-१ औदारिक २ वैक्रिय ३ तेजस ४ कार्मण।

संज्ञी मनुष्य में पांचों शरीर।

२ अवगाहना द्वार

सातों नरकों के नारकियों की अवगाहना। जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग मात्र है। (१) उत्कृष्टि पहली नरक में ७॥। धनुष छः अंगुल की (२) दूसरे नरक में १५॥ धनुष १२ अंगुल की (३) तीसरे नरक में ३१। धनुष की (४) चौथे नरक में ६२॥ धनुष की (५) पांचवें नरक में १२५ धनुष की (६) छठे नरक में २५० धनुष की (७) सातवें नरक में ५ धनुष की। उत्तर वैक्रिय करें तो मूल अवगाहना से दुगुनी कर सकते हैं।

देवताओं की अवगाहना

जघन्य तो सब की अंगुल के असंख्यातवें भाग मात्र की। उत्कृष्टि भवनपति व्यन्तर ज्योतिषी पहले दूसरे देव लोक में सात हाथ की। तीसरे और चौथे देवलोक में छ

हाथ की। पांचवें और छठे में ५ हाथ की। सातवें आठवें में ४ हाथ की। नववें दसवें ग्यारहवें बारहवें में ३ हाथ की

उत्तर वैक्रिय करें तो लाख योजन की कर सकते हैं।

नव मौ ग्रैवेयक में दो हाथ की। पांच अनुत्तर विमानों में एक हाथ की।

उत्तर वक्रिय वहां पर नहीं करते। शक्ति तो है। चार स्थावरसूक्ष्म साधारण वनस्पति असज्ञी मनुष्य की जघन्य उत्कृष्टि अगुल के असंख्यातवें भाग मात्र।

उत्कृष्टि साधिक १०० योजन कमल नाल की अपेक्षा।

द्वीन्द्रिय जीवों की १२ योजन की। त्रीन्द्रिय की तीन कोस की। चतुरिन्द्रिय की ४ कोस की। पञ्चेन्द्रिय जलचर संज्ञी असज्ञी की १० ० योजन की। स्थलचर असज्ञी की पृथक कोस की। स्थलचर संज्ञी की छः कोस की। खेचर संज्ञी असज्ञी की पृथक धनुष की। उरपुर संज्ञी की १००० योजन की। उरपुर असंज्ञी की पृथक योज्न की। भुजपुर सज्ञी की पृथक कोस की। भुजपुर असज्ञी की पृथक धनुष की।

मनुष्यों की अवगाहना

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु की तीन कोस की। ५ हरिवष ५ रम्यक्वर्ष की २ कोस की। ५ हैमवय ५ एरण्य वय की एक कोस की। ५६ अन्तरद्वीपों के युगलियों की ८ ० धनुष की। पांच महाविदेह के मनुष्यों की ५० धनुष की।

पांच भरत पांच ऐरावर्त की आरों के प्रमाण। पहला आरा लगते तीन कोस की। पहला उतरते दूसरा लगते दो कोस की। दूसरा उतरते तीसरा लगते एक कोस की। तीसरा उतरते चौथा लगते ५०० धनुष की। चौथा उतरते पांचवां लगते ७ हाथ की। पांचवां उतरते छठा लगते १ हाथ की। छठा उतरते पहला लगते एक हाथ से न्यून की। पहला उतरते दूसरा लगते ७ हाथ की। दूसरा उतरते तीसरा लगते ५०० धनुष की। तीसरा उतरते चौथा लगते एक कोस की। चौथा उतरते पांचवां लगते दो कोस की। पांचवां उतरते छठा लगते तीन कोस की।

तीर्थङ्करों की अवगाहना

१	श्री ऋषभदेव भगवान् की	५००	धनुष की
२	श्री अजितनाथ	४५०	
३	श्री सम्भवनाथ	४००	
४	श्री अभिनन्दन	३५०	"
५	श्री सुमतिनाथ "	३००	"
६	श्री पद्म प्रभ "	२५०	"
७	श्री सुपार्श्वनाथ "	२	
८	श्री चन्द्रप्रभु	१५	"
९	श्री सुविधिनाथ "	१	
१	श्री शीतलनाथ	९०	
११	श्री श्रयांसनाथ "	०	"

१२ श्री वासुपूज्य		७	
१३ श्री विमलनाथ	,	६०	
१४ श्री अनन्तनाथ		५०	
१५ श्री धर्मनाथ		४५	"
१६ श्री शान्तिनाथ	"	४०	"
१७ श्री कुंथुनाथ	"	३५	
१८ श्री अरहनाथ		३	
१९ श्री मल्लिनाथ	"	२५	
२० श्री मुनि सुव्रत स्वामी	"	२	"
२१ श्री नेमिनाथ		१५	"
२२ श्री अरिष्टनेमि		१	"
२३ श्री पार्श्वनाथ	"	९	हाथ की
२४ श्री वर्द्धमान		७	"

चक्रवर्तियो की अवगाहना

१ भरत चक्रवर्ती	की	५	धनुष की
२ सगर	"	४५	"
३ मघव	"	४२	
४ सनत्कुमार		४१	
५ शान्तिनाथ		४	"
६ कुंथुनाथ		३५	,
७ अरहनाथ		३०	"
८ सम्भूम		१८	"

पांच भरत पांच ऐरावत की आरों के प्रमाण। पहला आरा लगते तीन कोस की। पहला उतरते दूसरा लगते दो कोस की। दूसरा उतरते तीसरा लगते एक कोस की। तीसरा उतरते चौथा लगते ५०० धनुष की। चौथा उतरते पांचवां लगते ७ हाथ की। पांचवां उतरते छठा लगते १ हाथ की। छठा उतरते पहला लगते एक हाथ से न्यून की। पहला उतरते दूसरा लगते ७ हाथ की। दूसरा उतरते तीसरा लगते ५० धनुष की। तीसरा उतरते चौथा लगते एक कोस की। चौथा उतरते पांचवां लगते दो कोस की। पांचवां उतरते छठा लगते तीन कोस की।

तीर्थङ्करों की अवगाहना

१	श्री ऋषभदेव भगवान् की		५ ०	धनुष की
२	श्री अजितनाथ		४५	
३	श्री सम्भवनाथ		४००	,,
४	श्री अभिनन्दन	,,	३५	
५	श्री सुमतिनाथ	,,	३	
६	श्री पद्म प्रभु	,,	२५	,,
७	श्री सुपार्श्वनाथ	,,	२ ०	
८	श्री चन्द्रप्रभु		१५	,,
९	श्री सुविधिनाथ	,,	१००	,,
१०	श्री शीतलनाथ		९०	
११	श्री श्रेयांसनाथ	,,	०	,,

८ रामचन्द्र १६

९ बलभद्र „ १० „

प्रतिवासुदेवों की अवगाहना

१ अश्वग्रीव की ८०

२ तारक „ ७०

३ मेरक ६० „

४ मधुकैटभ „ ५०

५ निसुम्भ „ ४५

६ बलि २९

७ प्रहलाद २६

८ रावण १६

९ जरासिन्ध „ १० „

३ संहनन द्वार

संहनन छः हैं जो कि पच्चीस बोलों में वर्णित हैं। देवता नारकीय ये छः संहनन से रहित होते हैं। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च असंज्ञी मनुष्य इनमें एक सेवार्तक ही संहनन होता है। संज्ञी तिर्यञ्च संज्ञी मनुष्य में छः संहनन होते हैं। त्रेसठ शलाका पुरुष और युगलियों में और केवली भगवान् में एक वज्रऋषभ नाराच ही संहनन होता है।

९ महापद्म		१०	,,
१० हरिसेण	,,	१५	,,
११ जयनाम	,,	१२	,,
१२ ब्रह्मदत्त	,,	७	,,

वासुदेवों की अवगाहना

१ त्रिपृष्ठ	की	८०	धनुष की
२ द्विपृष्ठ	,,	७०	
३ सम्भव	,,	६०	,,
४ पुरुषोत्तम	,,	५०	,,
५ पुरुषसिंह	,,	४५	,,
६ पुरुष पुण्डरीक	,,	२९	,,
७ दत्त		२६	
८ लक्ष्मण	,,	१६	,,
९ कृष्ण		१०	

बलदेवों की अवगाहना

१ अचल	की	८	धनुष की
२ विजय		७०	
३ भद्र		६०	
४ सुप्रभ	,,	५	
५ सुदर्शन	,,	४५	
६ आनन्द		२९	,,
७ नन्दन		२६	,,

८ रामचन्द्र	"	१६	
९ बलभद्र	"	१	"

प्रतिवासुदेवों की अवगाहना

१ अश्वग्रीव	की	८	
२ तारक		७०	
३ मेरक		६०	
४ मधुकैटक		५०	"
५ निसम्भ	"	४५	
६ बल		२६	
७ प्रह्लाद		२६	"
८ रावण		१६	,
९ जरासिन्ध	"	१	"

३ संहनन द्वार

संहनन छः हैं जो कि पच्चीस बोलों में वर्णित हैं। देवता नारकीय ये छः संहनन से रहित होते हैं। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च असंज्ञी मनुष्य इनमें एक सेवार्तक ही संहनन होता है। संज्ञी तिर्यञ्च संज्ञी मनुष्य में छः संहनन होते हैं। त्रेसठ शलाका पुरुष और युगलियों में और केवली भगवान् में एक वज्रऋषभ नाराच ही संहनन होता है।

४ संस्थान द्वार

संस्थान छह हैं—समचतुरस्र २ न्यग्रोधपरिमण्डल ३ सादि ४ वामन ५ कुब्ज ६ हुंडक। नारकीय पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असज्ञी तिर्यञ्च असज्ञी मनुष्य पञ्चेन्द्रिय में एक हुंडक संस्थान होता है। पृथिवीकाय का मसूर की दाल के समान संस्थान। अप्काय का पानी के बुदबुद के समान तेजोकाय का सुइयों की राशि के अग्र भाग के समान। वायु काय का पत्ता के आकार। वनस्पति का नाना प्रकार का संस्थान है। सज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्य में छ: ही संस्थान होते हैं किन्तु त्रेसठ शलाका महापुरुष युगलिये और देवताओं में एक समचतुरस्र ही संस्थान होता है।

५ कषाय द्वार

कषाय चार हैं—१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ। चतुर्विंशति दण्डकों में यह ४ कषाय नियम से ही होते हैं। किन्तु सज्ञी मनुष्यों में इन चारों कषायों की भजना है। जैसे (१) नारकियों में क्रोध विशेष (२) मनुष्यों में मान विशेष (२) तिर्यञ्चों में माया विशेष (४) देवताओं में लोभ विशेष।

६ संज्ञा द्वार

संज्ञा चार है—१ आहार २ भय ३ मैथुन ४ परिग्रह। चतुर्विंशति दण्डकों में यह चारों ही संज्ञा नियम से होती है किन्तु सज्ञी मनुष्यों में इनकी भजना है। १ जैसे आहार संज्ञा तिर्यञ्च में विशेष २ भय संज्ञा नारकियों में विशेष ३

मैथुन संज्ञा मनुष्यों में विशेष ४ परिग्रह संज्ञा देवताओं में विशेष।

७ लेश्या द्वार विषय

लेश्या छः हैं—१ कृष्ण २ नील ३ कापोत ४ तेजो ५ पद्म ६ शुक्ल। पहले और दूसरे नरक में कापोत लेश्या है। तीसरे नरक में कापोत लेश्या नारकी बहुत हैं और नील लेश्या थोड़े हैं। चतुर्थ नरक में नील लेश्या होती है। पांचवें नरक में नील लेशी नारकी बहुत और कृष्ण लेशी थोड़े हैं। छठे नरक में कृष्ण लेशी नारकी हैं। सातवें नरक में महाकृष्ण लेशी नारकी हैं। भवनपति वानव्यन्तर देवों में कृष्ण नील कापोत और तेजो यह चारों लेश्यायें होता हैं। ज्योतिषिया और पहले दूसरे देवलोक में एक तेजो लेश्या होती है। तीसरे देवलोक से लेकर पांचवें देवलोक पर्यन्त एक पद्म लेश्या होती है। छठे स्वर्ग से लेकर २६ वें देवलोक पर्यन्त एक शुक्ल लेश्या होती है। बादर पृथ्वी पानी वनस्पति अपर्याप्त में चार लेश्याएं (कृष्ण नील कापोत तेजो) होती हैं। पांच स्थावर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त और पांच स्थावर बादर पर्य्याप्त तेजोकाय और वायु काय सूक्ष्म बादर पर्य्याप्त वा अपर्य्याप्त इनमें तीन लेश्याएं (कृष्ण नील कापोत) होती हैं। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च असंज्ञी मनुष्य पञ्चेन्द्रिय में तीन लेश्यायें कृष्ण नील कापोत होती हैं। संज्ञी तिर्यञ्च संज्ञी मनुष्यों में छः लेश्यायें होती हैं। किन्तु युगलियों में कृष्ण नील कापोत तेजो यह चारों लेश्यायें होती हैं।

८ इन्द्रिय द्वार विषय

इन्द्रिय पांच हैं जो कि पच्चीस बोलों में आ चुकी हैं। नारकी और देवताओं में पांचों इन्द्रियां होती हैं। पांच स्थावरों में एक स्पर्शेन्द्रिय होती है। द्वीन्द्रिय जीवों में दो इन्द्रियां (रस और स्पर्श) होती हैं। त्रीन्द्रिय जीवों में तीनों इन्द्रियां होती हैं। (जैसे १ घ्राण २ रस ३ स्पर्श)। चतुरिन्द्रिय जीवों में चार इन्द्रिय (१ चक्षु २ घ्राण ३ रस ४ स्पर्श) होती हैं। असंज्ञी तिर्यञ्च और असंज्ञी मनुष्यों में पांचों इन्द्रियां होती हैं। संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्यों में पांचों इन्द्रियां होती हैं।

९ समुद्घात द्वार विषय

समुद्घात सात प्रकार की हैं—१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक ४ वैक्रिय ५ तैजस ६ आहारिक ७ केवली।

नारकियों में चार समुद्घात हैं—(१ वेदनीय २ कषाय ३ वैक्रिय ४ मारणांतिक) भवनपति व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक पहले देवलोक से लेकर बारहवें देवलोक पर्यन्त ५ समुद्घात—(१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक ४ वैक्रिय ५ तैजस हैं। १३वें देवलोक से लेकर २६वें देवलोक पर्यन्त और पृथिवी पानी वनस्पति तेऊ काय में ३ तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च असंज्ञी मनुष्य पञ्चेन्द्रिय में ३ समुद्घात—(१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक) होते हैं। वायु काय में चार (१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक ४ वैक्रिय) होते हैं। संज्ञी तिर्यञ्च

पाँच—(१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक ४ वक्रिय ५ तेजस) मानुषी मे छः एक केवली अधिक हुई। किन्तु सज्ञी मनुष्य में सात ही समुद्घात होते हैं।

१० सज्ञी असज्ञी द्वार विषय

पहले नरक में संज्ञी और असज्ञी दोनो उत्पन्न होते हैं। किंतु पहले नरक से आगे दूसरे नरक से लेकर सातवें नरक पर्यन्त सज्ञी जीव ही उत्पन्न होते हैं। भवनपति वान व्यन्तर देवताओं [में सज्ञी और असज्ञी दोनों ही उत्पन्न होते हैं। ज्योतिषियों से लेकर वैमानिकों पर्यन्त केवल एक संज्ञी जीव ही उत्पन्न होता है। ५ स्थावर ३ विकलेंद्रिय कुल ८ असंज्ञी तिर्यञ्च ९ असज्ञी मनुष्य १० यह सर्व असंज्ञी जीव होते हैं। किन्तु १ संज्ञी तिर्यञ्च २ सज्ञी मनुष्य यह संज्ञी होते हैं।

११ वेद द्वार विषय

१ स्त्री वेद २ पुरुष वेद ३ नपुंसक वेद नारकीय पाँच स्थावर, तीन विकलेंद्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च असज्ञी मनुष्य में एक नपुंसक वेद ही होता है। भवन पति वानव्यन्तर, ज्योतिषी वैमानिक पहले और दूसरे देवलोक पर्यन्त दो वेद होते हैं—१ स्त्री २ पुरुष। तीसरे देव से लेकर २६ व देवलोक पर्यन्त केवल एक पुरुष वेद ही होता है। सज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्यों में तीनों ही वेद होते हैं।

१२ पर्याप्त द्वार

पर्याप्ति द्वार है जो कि पच्चीस बोलों में आ चुका है। एकेन्द्रिय में ४ पर्य्याप्ति होते हैं। जैसे कि १ आहार २ शरीर ३ इन्द्रिय ४ श्वासोश्वास। तीन विकलेन्द्रिया असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ५ पर्याप्ति होते हैं। किन्तु मन पर्याप्त नहीं। और असंज्ञी मनुष्य में चार पर्य्याप्ति होते हैं। अपितु मन पर्य्याप्ति और वचन पर्य्याप्ति नहीं होते। संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्य नारकी और देवताओं में छः पर्य्याप्ति होते हैं।

१३ दृष्टि द्वार विषय

दृष्टि तीन हैं—१ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र नारकी भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक १२ वें देव लोक पर्य्यन्त दृष्टि तीनों होती है। नव ग्रैवेयक विमानों में सम्यग् दृष्टि और मिथ्यादृष्टि यही दोनों होती है। अपितु पाँच अनुत्तर विमानों में एक ही सम्यग् दृष्टि होती है। पाँच स्थावर पर्य्याप्त और अपर्य्याप्त तीनों विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पर्य्याप्ति में एक मिथ्यादृष्टि होती है। असंज्ञी मनुष्य ५६ अन्तरद्वीपों के युगलियों में भी एक मिथ्यादृष्टि होती है। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च अपर्य्याप्ति ३ प्रकार के युगलियों में २ दृष्टि होती है। जैसे कि सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि। संज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और संज्ञी मनुष्यों में तीनों ही दृष्टि होती है। जैसे कि १ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र।

१४ दर्शन द्वार विषय

दर्शन ४ हैं, जो कि पहले आ चुके हैं। नारकी और देवताओं में ३ दर्शन होते हैं—१ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि। पांच स्थावर द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और असंज्ञी मनुष्य में एक अचक्षुदर्शन होता है। चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय में दो दर्शन होते हैं—१ चक्षु २ अचक्षु। संज्ञी तिर्यञ्च में १ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि यह तीन दर्शन होते हैं। संज्ञी मनुष्य में १ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि ४ केवल यह चारों दर्शन होते हैं।

१५ ज्ञान द्वार

ज्ञान पांच हैं। देवता नारकी संज्ञि तिर्यञ्च में ३ ज्ञान (१ मति २ श्रुति ३ अवधि) हैं। पांच स्थावर असंज्ञि मनुष्य किल्बिषी परमाधर्मी देव ५६ अन्तरद्वीप मनुष्य इनमें ज्ञान नहीं। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञि तिर्यञ्च अपर्याप्त में २ ज्ञान (१ मति २ श्रुति) हैं। पर्याप्त में नहीं। संज्ञि मनुष्य में पांचों ज्ञान।

१६ अज्ञान द्वार

अज्ञान तीन (१ मति २ श्रुति ३ विभङ्ग) हैं। सात नारकी भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी २१ वें देवलोक पर्यन्त ३ अज्ञान। पांच अनुत्तर विमानों में अज्ञान नहीं। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञि तिर्यञ्च असंज्ञि मनुष्य

१८ उपयोग द्वार विषय

उपयोग १२ है। जैसे कि—पांच ज्ञान तीन अज्ञान चार दर्शन। एवं १२। नारकी भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक २१ वें देवलोक पर्य्यन्त ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति श्रुत अवधि), तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु अवधि) एवं ९। पांच अनुत्तर विमानों में ६ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति श्रुति अवधि) तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु, अवधि) एवं ६। पांच स्थावर—असंज्ञी मनुष्य पर्य्याप्त अपर्याप्त द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय पर्य्याप्त इनमें ३ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुति अज्ञान ३ अचक्षुदर्शन। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्य्याप्त में ५ उपयोग होते हैं। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मतिअज्ञान ४ श्रुतअज्ञान ५ अचक्षुदर्शन एवं ५। चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पर्य्याप्त में ४ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ चक्षुदर्शन ४ अचक्षुदर्शन एवं ४। समुच्चय पर्य्याप्त अपर्य्याप्त चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च। पंचेन्द्रिय में ६ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति ज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मति अज्ञान ४ श्रुत अज्ञान ५ चक्षुर्दर्शन ६ अचक्षुदर्शन संज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु अवधि) एवं ९। संज्ञी मनुष्य में १२ उपयोग होते हैं

१९ आहार द्वार विषय

पांच स्थावर सूक्ष्म या बादर, तीन दिशाओं का आहार करें। तथा ४ तथा ५ तथा ६ दिशा का आहार करें और सब जीव ६ दिशाओं का आहार करें। नारकी देवता और पांच स्थावरों में दो प्रकार का आहार होता है। जैसे कि—१ औज्झाहार और २ रोमाहार। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च संज्ञी तिर्यंच संज्ञी मनुष्य में तीनों प्रकार का आहार होता है। जैसे कि—औज्झाहार २ रोमाहार और ३ कव आहार।

२० उत्पात द्वार विषय

नरक में जीव दो दण्डकों से उत्पन्न होते हैं। जैसे कि—१ तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय और २ मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक आठवें देवलोक पर्यन्त जीव दो दण्डकों से उत्पन्न होते हैं। १ तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय २ मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। आठवे देवलोक से उपरांत २१वें देवलोक पर्यन्त केवल एक मनुष्य दण्डक से ही उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी पानी वनस्पति में जीव नरक को छोड़कर २१ दण्डकों से उत्पन्न होते है। तेजो और वायु काय मे जीव १ दण्डकों से उत्पन्न होते हैं। जैसे कि पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। एवं १०। तीन विकलेन्द्रियों के जीव १ दण्डकों से उत्पन्न होते हैं। जैसे कि—पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य

पञ्चेन्द्रिय। असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जीव पूर्वोक्त १० दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। संज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जीव २४ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। असंज्ञी मनुष्य में जीव ८ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। जैसे कि—पृथ्वी पानी वनस्पति तीनों विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। संज्ञी मनुष्य में जीव तेजा, वायु, काय वर्ज के शेष २२ दण्डकों से आकर उत्पन्न होता है।

२१ आयु द्वार विषय

पहले नरक के नरकियों की आयु जघन्य १ हजार वर्ष की उत्कृष्टि स्थिति एक सागर की उसके प्रस्तर (पाथड़े) १३ हैं। पहले प्रस्तर की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टि १ हजार वर्ष की दूसरे प्रस्तर की जघन्य ९० हजार वर्ष की उत्कृष्टि स्थिति ९ लाख वर्ष की तीसरे प्रस्तर की जघन्य १० लाख वर्ष की उत्कृष्टि स्थिति करोड़ पूर्व की। इसके आगे १० प्रस्तर और हैं। किन्तु एक सागर के दस भाग करके प्रति प्रस्तर एक २ भाग बड़ा लेना चाहिए। जैसे कि—चौथे प्रस्तर की जघन्य स्थिति १ पूर्व की उत्कृष्टि दस भाग के एक भाग की।

पाँचवें प्रस्तर की जघन्य एक भाग की उत्कृष्टि २ भाग की
छठे २ ३
सातवें ,, ४ ,,
आठवें ४ ५ ,, ,,

नौवे	५	६ ,,
दसवें ,,	६ ,,	७ ,,
एकादशवे ,,	७ ,	८ ,, ,,
द्वादशवें ,,	८ ,	,,
त्रयोदशवें	९	१ ,, अर्थात्

एक सागर की १३।

दूसरे नरक के नारकियों की स्थिति

जघन्य १ सागर की उत्कृष्टि ३ सागर की सो जघन्य से दो सागर और बढ़ अपितु दूसरे नरक में ११ प्रस्तर हैं। सो एक सागर के ११ भाग करने चाहिए। इस प्रकार करने से दो सागरों के द्वाविंशति २२ भाग हुए। फिर प्रति प्रस्तर १ सागर दो भाग वृद्धि कर लेने चाहिए। जैसे कि—

पहले प्रस्तर की जघन्य १ सागर की उत्कृष्टि १ सागर दो भाग की

दूसरे	१ सागर दो माग	उत्कृष्टि	१ सागर	४ भाग की	
तीसरे	१	४		१	६
चौथे	१	६		१	८
पाचवें	१	८	,,	१	१० ,,
छठे	१	१		२ सागर	१ की
सातवें		१	,,	२ ,,	३
आठवें	२ ,,	३	,,	२	५
नौवें	२	५		२ ,,	७

दसवें	„	२	७	उत्कृष्ट २	९ „
एकादशवें	२	„ ७	„	३ „	सागर की

दूसरे नरक की स्थिति—जघन्य ३ सागर का उत्कृष्ट ७ सागर की। तीसरे नरक के ९ प्रस्तर हैं। जिस में सागर बढ़े ४ फिर एक २ सागर के नौ नौ भाग कर लेने चाहिए। सो (९×४) ३६ भाग हुए। फिर प्रति प्रस्तर के चार चार भाग वृद्धि कर लेने चाहिएं। जैसे कि—

पहले प्रस्तर की जघन्य ३ सागर उत्कृष्ट ३ सागर ४ भाग की
दूसरे „ ३ ४ भाग की उत्कृष्ट ३ सागर ८ भाग की
तीसरे ३ ८ ४ „ २
चौथे ४ „ ४ ७
पांचवें प्रस्तर का जघन्य ४ सागर ७ भाग की उत्कृष्ट ५ सागर दो भाग का

छठे	५	„ २ „	५	६	
सातवें	५	, ६	६	१ „	
आठवें	६	„ १	६	५ „	
नवमे	६	५	७ सागर का		

चौथे नरक में नारकियों की स्थिति—जघन्य सात सागर की उत्कृष्ट १० सागर की अपितु चौथे नरक के सात प्रस्तर हैं। किन्तु तीन सागर बढ़े। फिर एक एक सागर के सात सात भाग करने चाहिए। सो (७×३) २१ हुए। फिर प्रति प्रस्तर ३ भागों की वृद्धि कर लेना चाहिए। जैसे कि—

पहले प्रस्तर की जघन्य सात सागर की उत्कृष्टि ७ सागर २ भाग की

दूसरे	७ सागर	२ भाग उत्कृष्टि	७	६
तीसरे	७ ,,	६	८	२
चौथे	८	२	८	५
पांचवें ,,	८	५	६ ,,	१ ,,
छठे	९	१ ,,	९	४
सातव	९	४ ,,	१०	सागरोपम की

पांचवें नरक के नारकियों की स्थिति—जघन्य १ सागरोपम की उत्कृष्टि ७ सागरोपम को पांचवें नरक के ५ प्रस्तर हैं जिस में सागर बढ़ ७ फिर प्रति प्रस्तर एक एक सागर बढ़ा लेना चाहिये। फिर २ सागर और बढ़। फिर एक सागर के पांच भाग कर लेने चाहिएं। इस प्रकार करने से दो सागरों के १० भाग हुए फिर एक सागर २ भाग प्रति प्रस्तर बढ़ा लेना चाहिए। जैसे कि—पहले प्रस्तर की जघन्य १ सागरोपम की उत्कृष्टि ११ सागर २ भाग की

दूसरे	११ सागर	२ भाग	१२	४ ,,
तीसरे	१	४	१४	१ ,,
चौथे	१	१	१५	३ ,,
पांचवें	१५ ,,	३	१७	सागरोपम की

छठे नरक के नारकियों की स्थिति—जघन्य १७ सागरोपम की उत्कृष्टि २ सागरोपम की छठे नरक के तीन प्रस्तर हैं।

जिसमें सागर तक पांच। फिर पांचों सागरों में से २ सागरों के ६ भाग कर लेने चाहिए। फिर प्रति प्रस्तर १ सागर २ भाग की वृद्धि कर लेनी चाहिये। जैसे कि— पहले प्रस्तर की जघन्य १७ सागर की उत्कृष्टि १८ सागर २ भाग की

दूसरे ,, १८ सागर २ भाग उत्कृष्टि २० सागर १
तीसरे २ १ २२ सागर की

सातवें नरक का एक ही प्रस्तर है। किन्तु नरकावास पांच है। जैसे कि—१ काले २ महाकाले ३ रौरव ४ महारौरव ५ अप्पईठाण अपितु इन पांचों नरकावासों में का पहले चार नरकावास है। उनमें नारकियों की जघन्य स्थिति २२ सागरोपम प्रमाण है। उत्कृष्टि स्थिति ३ सागरोपम प्रमाण की है। किन्तु 'अप्पईठाण' नरकावास की जघन्य वा उत्कृष्टि स्थिति ३३ सागरोपम प्रमाण की है। भवनपति असुरकुमारों के दो इन्द्र–१ चमरइन्द्र २ बलइन्द्र। चमरइन्द्र की राजधानी दक्षिण की ओर बलइन्द्र की राजधानी उत्तर की ओर।

भवनपतियों की स्थिति

दक्षिण दिग् के असुरकुमारों की स्थिति—जघन्य दस हजार वर्ष की। उत्कृष्टि एक सागर की। उनकी देवियों की जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्टि साढ़े तीन पल्योपम की। दक्षिण दिग् के नवनिकाय की जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्टि

भाग उत्कृष्टी अद्ध पल्योपम १० वर्ष की। ग्रह विमान वासी देवों की स्थिति जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग उत्कृष्टि एक पल्योपम की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग उत्कृष्टि अर्ध पल्योपम की नक्षत्र विमान वासी देवों की स्थिति-जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग उत्कृष्टि अर्ध पल्योपम की। उनकी देवियों को जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग उत्कृष्टि चतुर्थ भाग से कुछ अधिक। तारा विमानवासी देवों की स्थिति-जघन्य पल्योपम का आठवां भाग उत्कृष्टि पल्योपम के चतुर्थ भाग की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का आठवां भाग उत्कृष्टि आठवें भाग से कुछ अधिक।

वैमानिक देवों की स्थिति

पहले देवलोक के देवों की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्टि दो सागरोपम की। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्टि सात पल्योपम की। अपरिगृहीत देवियों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्टि ५० पल्योपम की। दूसरे देवलोक के देवों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्टि दो सागरोपम से कुछ अधिक। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक। उत्कृष्टि नव पल्योपम से कुछ अधिक अपरिगृहीत देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्टि ५५ पल्योपम की।

एकोनविंशतिवें	२८	२९
२०वें	२९	३० ,
११वें	३० ,,	३१

चार अनुत्तर विमानवासी देवों की जघन्य स्थिति ३१ सागरोपम की उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की। सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देवों की स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की।

पांच स्थावरों की स्थिति

पांच स्थावरों की जघन्य स्थिति अन्तमुहूर्त की होती है। उत्कृष्ट का विवरण निम्न प्रकार से है। पृथ्वीकाय के छः भेद हैं। १ सण्हा २ सुधा ३ बालुका ४ मणोसिला ५ सक्करा ६ खरपुढवी। इनकी यथाक्रम से स्थिति इस प्रकार है—१ १ १४ १६ १ २ हजार वर्ष की। अपकाय की सात हजार वर्ष की। तेजोकाय की ३ दिन और १ रात्रि की। वायुकाय की तीन हजार वर्ष की। वनस्पतिकाय की। दस हजार वर्ष की।

पांच स्थावर सूक्ष्म और असंज्ञी मनुष्य की स्थिति

जघन्य और उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की। तीन विकलेन्द्रियां। तिर्यञ्च पंचेन्द्रियां। किन्तु युगलिक वर्ज के गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रियां की जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट इस प्रकार से है।

द्वीन्द्रिय जीवों की १२ वर्ष की

त्रीन्द्रिय	४९	दिनों
चक्षुरिन्द्रिय ,,	६	मास

पंचेन्द्रिय के ५ भेद हैं। १ जलचर २ स्थलचर ३ खेचर ४ उरपुर ५ भुजपुर।

(१) जलचर सज्ञी और असंज्ञी की करोड़ पूर्व की। (२) स्थलचर सज्ञी को तीन पल्योपम की। (३) स्थलचर असज्ञी की ८ ० वर्ष की। (४) खेचर संज्ञी की पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण। (५) खेचर असंज्ञी की ७२ वर्ष की। (६) उरपुर सज्ञी की करोड़ पूर्व की। (७) उरपुर असज्ञी की ५३० वर्ष की। (८) भुजपुर सज्ञी का एक करोड़ पूर्व की। (९) भुजपुर असज्ञी की ४२ हजार वर्ष की।

सज्ञी मनुष्य का विवरण

५ भरत ५ एरावत के पहले आरे लगते हुए और ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु के युगलिये मनुष्यों को स्थिति-जघन्य तीन पल्योपम से कुछ न्यून। उत्कृष्ट तीन पल्योपम की।

५ भरत ५ एरावत के पहले आरे के उतरते हुए दूसरे आरे के लगते हुए ५ हरिवर्ष ५ रम्यक वर्ष के युगलिये मनुष्यों को जघन्य दो पल्योपम से कुछ न्यून। उत्कृष्ट दो पल्योपम की।

५ भरत ५ एरावर्त दूसरे आरे उतरते हुए तीसरे आरे के लगते हुए और ५ हैमवय ५ हैरण्यवय युगलिये मनुष्यों की जघन्य एक पल्योपम की।

५ भरत ५ ऐरावर्त के तीसरे आरे उतरते हुए चौथे आरे के लगते हुए और ५ महाविदह के मनुष्यों की आयु, जघन्य अन्तमु हूर्त की उत्कष्ट करोड़ पूर्व की।

५ भरत ५ ऐरावर्त के चतुर्थ आरे के उतरते हुए पांचवें आरे के लगते हुए मनुष्यों की जघन्य अन्तमु हूर्त की उत्कष्टि १२० वर्ष की।

पांचवें आरे उतरते हुए छठे आरे के लगते हुए ५ भरत ५ ऐरावत्त के मनुष्यों की स्थिति जघन्य अन्तमु हूर्त कि उत्कष्टि २ वष को छठे आरे उतरते हुए १६ वप की। इसी प्रकार उत्सर्पिणी काल की स्थिति जाननी चाहिये। ५६ अन्तरद्विपों के युगलिये मनुष्यों की जघन्य पल्यापम के असंख्यातवें भाग से कुछ न्यून उत्कष्टि पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण।

तीर्थङ्करों की स्थिति विषय

१	श्री ऋषभदेव भगवान् की	८४ लख पूर्व की
२	श्री अजितनाथ ,,	७२ ,,
३	श्री सम्भवनाथ	६ ,,
४	,, अभिनन्दन	५
५	सुमतिनाथ ,,	४० ,,
६	,, पद्मप्रभु	३०
७	सुपार्श्वनाथ	२ ,,
८	चन्द्रप्रभु	१०

९	सुविधिनाथ	,	२ ,,
१	शीतलनाथ	,	१ ,,
११	श्रेयांसनाथ		८४ लक्ष वर्ष की
१२	वासुपूज्य	,,	७२ ,,
१३	विमलनाथ		६
१४	अनन्तनाथ		३ ,
१५	धर्मनाथ	,,	१
१६	शान्तिनाथ		१ ,,
१७	कुंथुनाथ	,	९५ हजार वर्ष की
१८	अरहनाथ		८४
१९	मल्लिनाथ	,,	५५
२	मुनिसुव्रत		३ ,
२१	नेमिनाथ		१ ,,
२२	अरिष्टनेमि		१
२३	पार्श्वनाथ		१ ०
२४	महावीर स्वामी		७२

चक्रवर्तियों की स्थिति विषय

१	भरतचक्रवर्ती की	८४ लाख पूर्व की
	सागर	७२
३	मघव	५
४	सनत्कुमार	३
	—न्तिनाथ	१ लाख वर्ष

५	सुनन्द	६७ „
६	आनन्द	८५ हजार वर्ष की
७	नन्दन	६५ „
८	रामचन्द्र	१५ „
९	बलभद्र	१२००

प्रतिवासुदेवों की स्थिति विषय

१	अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव की	८४ लक्ष वर्ष की
२	तारक	७२
३	मेरक	६५
४	मधुकैटभ	५५
५	निसुम्भ „	१०
६	बल „	८५ हजार वर्ष की
७	प्रह्लाद	६५ „
८	रावण „	१५ „
९	जरासिन्ध	१२०० वर्ष की

२२ समाहिया द्वार

चारों गतियों के जीव दो प्रकार से मारणान्तिक समुद्घात से मृत्यु होते हैं। एक तो तन्तुवाय के डाले के समान द्वितीय बन्दूक की गोली के समान। अर्थात् एक जीव के प्रदेश तन्तुवाय के डाले के समान धाराप्रवाहपूर्वक निकलते हैं। दूसरे बन्दूक की गोली के समान एक ही बार प्रदेश निकल जाते हैं।

२३ च्यवन द्वार

जिस प्रकार उत्पात द्वार का वर्णन किया गया है उसी प्रकार च्यवन द्वार का स्वरूप जानना चाहिये ।

२४ गतागति द्वार विषय

पहले नरक की २१ भागति—१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च ५ असज्ञी तियच। एवं २५ [२० की गति १५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च] दूसरे नरक की २० की भागति—१५ कमभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च। २० की गति १५ कम भूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यंच, तीसरे नरक की १९ की भागति और गति २० की है। किन्तु एक भुजपुर टल गया। चौथे नरक की १८ की भागति (खेचर टल गया) गति वही २० की। पांचवें नरक की १७ की भागति (स्थलचर टल गया) गति २० की। छठे नरक की १६ की भागति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। सातवें नरक की १६ की भागति १५ कर्मभूमि के मनुष्य एक जलचर पुरुष-(स्त्री नहीं जाति) गति ५ सज्ञी तिर्यञ्च की।

भवनपति वाणव्यन्तर की भागति १११ की ५६ अन्तर द्वीपा के युगलिये १५ कर्मभूमिये मनुष्य ३० अकर्मभूमिय मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च ५ असज्ञी तियञ्च एव सब १११।

ग त २३ की १५ कर्मभूमिय मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च १ पृथ्वी २ पानी ३ वनस्पति एवं २३। ज्योतिषी तथा

बीस भद पचेन्द्रिय तिर्यंच के हैं

जैसे कि—१ जलचर २ स्थलचर ३ खेचर ४ उरपुर ५ भुजपुर पांच सञ्ञी, पांच असञ्ञी पांच पर्य्याप्त और ५ अपर्य्याप्त एवं २ । ये सर्व भेद ४८ तिर्यञ्चों के हैं। इस सर्व प्रकारों का नाम १७९ का थोकड़ा है। सब प्रकार २४१ हुए पृथ्वी पानी वनस्पति की गति १७१ की तेजो वायु की आगति १७१ के थोकड़े की। गति ४८ तिर्यञ्चों की। तीन विकलेन्द्रिय द्वीन्द्रियों त्रीन्द्रियों चतुरिन्द्रियों की आगति १७९ के थोकड़े की। गति १७१ के थोकड़े की। पांच असंज्ञी तिर्यञ्चा की आगति १७१ के थोकड़े की। गति ३९५ की—५१ प्रकार के देवता—१ भवनपति १५ परमाधर्मी १६ वाणव्यन्तर १ तिर्यञ्चजृम्भक एवं ५१। फिर ५६ अन्तर द्वीपों के युग लिये एक पहला नरक एवं १ ८ अपर्य्याप्त १ ८ पर्य्याप्त कुल ३९५। फिर १७१ के थोकड़े के मिलाने से ३९५ हो जाते हैं। सञ्ञी—तिर्यञ्च की आगति २६७ की ८१ प्रकार के देवता जैसे कि- १ प्रकार के भवनपति १५ प्रकार के परमाधमी १६ प्रकार के वाणव्यन्तर १ प्रकार के तिर्यञ्चजृम्भक १ प्रकार के ज्योतिषी। ३ प्रकार के किल्बिषिक ९ प्रकार के लोकान्तिक ८ देवलोक एवं ८१। ७९ का थोकड़ा एवं सर्व ११ सातो नरक एवं २६७।

५२७ की गति—५६३ भवो में से १६ बोल टल गए

जैसे कि आठवें देवलोक से ऊपर चार देवलोक और नव ग्रैवेयक विमान पांच अनुत्तर विमान एवं १८ अपर्याप्त और १८ पर्याप्त एवं ३६ बोल टल गये। ५६३ में से शेष ५२७ रहे सो इन स्थानों में काल करके आ सकता है। असंज्ञी मनुष्य की आगति १७१ के थोकड़े की। १७९ के थोकड़े मे से ८ बोल टल गए।

जैसे कि—(१) तेजोकाय (२) वायुकाय (३) सूक्ष्म (४) बादर। चारों ही अपर्याप्त चारों ही पर्याप्त एवं ८ टले बाकी १७१ रहे। असंज्ञी मनुष्य की गति १७१ के थोकड़े की। संज्ञी मनुष्य की आगति २७६ की ९९ प्रकार के देवता ६ नरक १७१ का थोकड़ा एवं २७६ हुए।

गति ५६३ की। ५६ अन्तरद्वीपों के युगलियों की आगति २५ की १५ कर्मभूमिये मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च ५ असंज्ञी तिर्यञ्च एवं २५ हुए।

गति १०२ की। १० भवनपति १५ परमाधर्मी १६ वाणव्यन्तर १० तिर्यञ्चजृम्भक एवं। ५१ अपर्याप्त ५१ पर्याप्त। एवं १०२ हुए।

पांच हैमवय—पांच एरण्यवय के युगलिया की आगति २० की १५ कर्मभूमिये मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च एवं २०।

गति १०४ की—५१ पिछले १० ज्योतिषी १ पहला देवलोक यह सर्व ५२ अपर्याप्त ५२ पर्याप्त एवं सर्व १०४ हुए।

पांच हरिवर्ष पांच रम्यक वर्ष के युगलियों की आगति पूर्वोक्त २ की। गति १२६ की। जैसे कि १२४ तो पिछले और एक दूसरे देव लोक का देवता अपर्याप्त और पर्याप्त एवं १२६ हुए।

५ देव कुरु ५ उत्तर कुरु के युगलियों की आगति पूर्वोक्त २ की। गति १२८ की—१२६ पिछले एक किल्विषिक तीन पल्योपम वाले अपर्याप्त और पर्याप्त एवं १२८ हुए।

तीर्थंकरदेव की आगति ३८ की जैसे कि—२६ देवलोक ९ लोकान्तिक देव ३ नरक एवं सब ३८ हुए।

गति एक मुक्ति की—केवली भगवान की आगति १०८ की ८१ प्रकार के देवता ९९ प्रकार के देवों में से १८ टल गए। जैसे कि— १ परमाधर्मी तीन किल्विषिकदेव एवं १८ शेष ८१ भेद हुए। १५ कर्मभूमिये मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च और पृथ्वी पानी वनस्पति तथा चार नरक एवं १०८ हुए।

गति एक मुक्ति की—साधु की आगति २७५ की ९९ प्रकार के देवता ५ नरक १७१ का थोकड़ा एवं २७५ हुए।

गति ७ की—२६ देवलोक ९ लोकान्तिकदेव एवं ३५ अपर्याप्त ३५ पर्याप्त एवं ७ हुए।

मूल गुण के विराधक साधु का आगति पूर्वोक्त २७५ की गति १२६ की जैसे कि—१ भवनपतिदेव १५ परमाधर्मी

प्रकार के देवता ७ नरक ८६ प्रकार के युगलिये १७१ का थोकड़ा एवं सर्व ३६३ हुए।

गति २४८ की ९९ प्रकार के देवता ६ नरक १५ कर्म भूमिये मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च यह सर्व १२५ बोल हुए।

१२५ अपर्य्याप्त और १२५ पर्य्याप्त एवं २५० हुए।

तीनों विकलेन्द्रियों का अपर्य्याप्त ५ असज्ञी तिर्यञ्च का अपर्य्याप्त एव ८ यह सर्व २५८ हुए।

मिथ्या दृष्टि की आगति ३६६ को ९४ प्रकार के देवता ५ अनुत्तर विमानों के देवता टल गए। ७ नरक ८६ प्रकार के युगलिये।

५ हैमवय ५ एरण्यवय ५ हरिवर्ष ५ रम्यक्वष ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ५६ अन्तरद्वीपों के युगलिये एवं ८६। १७१ का थोकड़ा एवं सर्व ३६६ हुए।

गति ५५३ की—जीव के ५६३ भेदों में से ५ अनुत्तर विमान टल गए। ५ पर्य्याप्त ५ अपर्य्याप्त एव १ टले। शेष ५५३ रहे। इतने स्थानों में मिथ्यादृष्टि काल करके जाता है। प्रतिवासुदेव की आगति २७९ की १७ का थोकड़ा ९४ प्रकार के देवता ६ नरक। गति अबोलाक की पुरुषवद की आगति ३७१ की ९९ प्रकार के देवता ७ नरक ८६ प्रकार के युगलिये १७९ का थोकड़ा गति ५६३ की स्त्री वद की आगति ३७१ की ९ प्रकार के देवता ७ नरक ८६ प्रकार के युगलिये १७९ का थोकड़ा गति ५६१ की

२६ योग द्वार विषय

योग तीन है—१ मन २ वचन ३ काय। नारकीय और देवताओं में ३ योग होते है। परन्तु विशेष इतना ही है कि देवता के मन और वचन के योग एक ही समय उत्पन्न होते है।

५ स्थावरों मे एक ही काय का योग होता है और तीनों विकलेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में २ योग [१ वचन २ काय] होते है।

असंज्ञी मनुष्य में एक काय का ही योग होता है किन्तु संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्यों में तीनों ही योग होते है।

इति षट् विंशति द्वार समाप्त।

देवलोक का २६ द्वार विषय

गाथा—नाम मठाण पयरे विमाणे पर्वे पद्दा' मंखाय
मय मलाय राजुमाधार मय हैलव भग्ने ॥१॥

मन चिन्ह ममानिय मायेस्स लोकपाला मायतमि भमि
का पसदा भगमहमी प्रमारना विमान नामा मावन मावन
नान शक्ति पुण्य पगहिये मयपगहि ॥२॥

१ नाम द्वार	१४ आत्मरक्षक द्वार
२ मस्थान	१५ लोकपाल ,,
पत्तम	१६ तेतीस
४ विमान	१७ अनिका
५ पन्हिवन्ध	१८ परिषद्
६ मम्यातासम्याता द्वार	१९ अग्रमहिषी ,
७ राजु द्वार राजु का प्रमाण	२ परिचारना द्वार
८ आधार द्वार	२१ विमान नाम ,,
महन	२२ माने माने का
९ अवगाहना	२३ ज्ञान
११ वण	२४ दासित द्वार
१ चिन्ह	२५ पुण्य द्वार
१३ मामानिक द्वार	२६ परिगृहीत अपरिगृहीत द्वार

तीसरी त्रिक में ११ ,,
पांच अनुत्तर विमानों में ५ पंक्ति बन्ध।

६ संख्यातासंख्याता द्वार

सर्व विमानों को ५ भाग में बांटा गया है जिस में ४ भाग तो असंख्याते योजनों के विमान असंख्याते देवता रहते हैं। एक भाग में संख्याते योजनों के विमान संख्याते देवता रहते हैं।

७ राजु द्वार

सुमेरु गिरि के पास समभूमि से ७९० योजन तारा मण्डल है। तारा मण्डल से १० योजन ऊपर सूर्य का विमान है। सूर्य के विमान से ८० योजन ऊपर चन्द्रमा का विमान है। चन्द्रमा के विमान से ४ योजन ऊपर २८ नक्षत्रों के विमान हैं। नक्षत्रों से ४ योजन ऊपर बुध का विमान है। बुध से ३ योजन ऊपर शुक्र का विमान है। शुक्र से ३ योजन ऊपर बृहस्पति का विमान है।

बृहस्पति से मंगल
मंगल से शनैश्चर

समभूमि से ऊपर १ $\frac{1}{2}$ (डेढ़) राजु पहला दूसरा देव लोक है।
उसे १ तीसरा चौथा
$\frac{1}{2}$ (आधा) पांचवा छट्टा ,,
$\frac{1}{2}$ (पाव) सातवां आठवां ,, ,,
,, १ नववां दशवां ग्यारवां बारहवां

७ ८ ८०० — —
९ १० ११ १२ ९०० — —
नवग्रैवेयक में १ हजार योजन ऊँचे। ५ अनुत्तर विमानों में ११ ग्यारह सौ योजन ऊँचे महल हैं।

१० जगनाई द्वार

पहले दूसरे देवलोक में २७०० योजन की जगनाई।
३ ४ — २६०० — —
५ ६ — २५०० ..
७ ८ २४०० —
९ १० ११ १२ २३०० ..
नवग्रैवेयक २२००
५ अनुत्तर विमाना २१००

११ वर्ण द्वार

पहले दूसरे देवलोक मे पांचों वर्णों के विमान यथाहुदाव के होते हैं।
३ ४ ४ [काला नहीं]
५, ६ ... ३ [नीला नहीं]
७ ८ .. २ — [लाल नहीं]
९ से लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक एक ही वर्ण श्वेत।

१२ चिह्न द्वार

मुकुटों के चिन्ह।
पहले देवलोक के इन्द्र के मुकुट का मृग का चिह्न।
दूसरे

दूसरे देवलोक के इन्द्र के १ करोड़ १ लाख ६० हजार

तीसरे देवलोक के इन्द्र के ९१ लाख ८४ हजार

चौथे देवलोक के ८८ लाख ९ हजार

पांचवें देवलोक के ७६ लाख १० हजार

छठे देवलोक के ६३ लाख २० हजार

सातवें देवलोक के ५० लाख ८ हजार

आठवें देवलोक के १८ लाख १ हजार

नौवें दसवें देवलोक के २५ लाख ४ हजार

११वें १२वें देवलोक के १२ लाख ७ हजार

१८ परिषद् द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ३ परिषद्।

१२ अन्दर की परिषद् के १४ ०० मध्य की परिषद् के १६ बाहिर की परिषद् के।

दूसरे इन्द्र के	१ हजार की	१२ हजार की	१४ हजार की परिषद्
तीसरे	८	१	१२ „
चौथे	६		१ „
पांचवें	४	६	८
छठे		४	६ „
सातवें	१	२	४
आठवें	५	१ „	२०
नवमें दसवें	५	४	१० „

ग्यारहवें बारहवें ११२ २६० ,, ३ ० ,

१६ अग्रमहिषी द्वार

पहले इन्द्र का ८ अग्रमहिषियां।

एक अग्रमहिषी का १६ हजार देवियों का परिवार है। तो कुल परिवार आठों का १२८ ०० है।

यह एक देवी वैक्रिय करे तो १६० ० देवी हुई। इस प्रकार इन्द्र का सर्व परिवार २०४८००००० देवियों का है।

दूसरे इन्द्र का भी ऐसा समझ लेना।

२० परिचारणा द्वार

पहिले दूसरे देवलोक में मनुष्यवत् सहवास।
तीसरे चौथे ,, ,, स्पर्श मात्र
पांचवें छट्ठे ,, रूप अवलोकन से तृप्ति।
७वें ८वें ,, शब्द मात्र ,,
९वें १०वें ११वें १२वें,, मन

२१ विमाननाम द्वार

पहिले देवलोक में पालक नामक विमान।
दूसरे पुष्पक ,,
तीसरे ,, सोमानस ,,
चौथे ,, नन्दीवर्धन ,,
पांचवें ,, काम ,,

५वें छठे वाला ऊपर अपनी ध्वजा पताका तक नीचे तीसरे
नरक का चरमान्त तिर्च्छे असंख्याते द्वीप समुद्र तक।
७वें ८वें „ „ चौथी
नरक का चरमान्त तिर्च्छे असंख्याते द्वीप समुद्र तक
९वें १०वें, ११वें १२वें „ „ „
नव ग्रैवेयक वेग में पहले दूसरे त्रिक वाले ऊपर
ध्वजापताका तक नीचे छठी नरक का चरमान्त तिर्च्छे अस
ख्यात द्वीप समुद्र तक।
नव नवग्रैवेयक में तीसरी त्रिकवाले ऊपर ध्वजापताका
तक नीचे सातवीं नरक का चरमान्त तिर्च्छे असंख्याते द्वीप
समुद्र तक।
पांच अनुत्तर विमानों के देवते कुछ न्यून सम्पूर्ण लोक
देख सकते हैं।

२४ शक्ति द्वार

वाणव्यन्तर, नवनिकाय ज्योतिषी इनकी शक्ति वैक्रिय
करने की थोडी।
चमरेन्द्र की शक्ति एक जम्बूद्वीप भर देने की।
बलेन्द्र „ साधिक एक जम्बूद्वीप „
पहले देवलोक के इन्द्र को २ जम्बूद्वीप भर देने की शक्ति।
दूसरे „ २ „ [कुछ अधिक]
तीसरे ४ „ „

चौथे	"	४	[कुछ अधिक]	"
पांचवें	"	८	,	
छठे		८	[कुछ अधिक]	,
सातवें ,	"	१६		
८वें "	,	१६	[कुछ अधिक]	
९वें १०वें	"	३२		
११वें १२वें	"	३२	, [कुछ अधिक]	"

वैक्रिय की शक्ति से भर देने की इतनी शक्ति होती है।

२५ पुण्य द्वार

बाणव्यन्तर १०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं। ज्योतिषी २ वर्ष पीछे उतना भोगते हैं। इनका इन्द्र ३०० वर्ष पीछे उतना पुण्य भोगता है।

भवनपति ४ वर्ष में इतना पुण्य भोगते हैं।
उनके इन्द्र ५ वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं।

पहले दूसरे देवलोक वाले	१०० वर्ष			
तीसरे चौथे	२			
पांचवें छठे	३ ०			
[illegible]	४ ००	"	"	"
[illegible] ११वें १२वें	५ ०		"	"
[illegible] पहली त्रिकवाले १ ०			"	
[illegible]	२ ०	"	"	"

तीसरी	३००००	,, ,,	,,
४ अनुत्तर विमानों वाले	४०० ०	,,	
सर्वार्थसिद्ध वाले	५००००		,,

२६ परिगृहीत अपरिगृहीत द्वार

पहले देवलोक वाले देवता जघन्य एक पल की आयुवाली देवी भोगते हैं।

	उत्कृष्ट	७ पल	की	देवी
दूसरे	जघन्य	एक पल से अधिक		,,
	उत्कृष्ट	९ पल	की	देवी
तीसरे	जघन्य	७ पल		
	उत्कृष्ट	१ पल	की	देवी
चौथे	जघन्य	१		,,
	उत्कृष्ट	१५ पल	की	देवी
पांचवें	जघन्य	१५	की	देवी
	उत्कृष्ट	२ पल	,,	,,
छठ	जघन्य	२०	,,	,,
	उत्कृष्ट २५ पल की देवी			

सातवें वाले जघन्य २५ पल की। उत्कृष्ट ३ पल की।

आठवें		१०		१५ ,,
नौवें	,,	१५	,,	४
दसवें		४०		४५

दूसरी पृथ्वी का १३२ ०० योजन मोटा दल है। उसमें एक हजार नीचे एक हजार ऊपर छोड़कर मध्य ११ ०० योजन की पोलार में ११ पाथड़े (मंजलें) और २५ लाख नरक के वास हैं।

तीसरी पृथ्वी का १२८ ० योजन मोटा दल है। जिसमें एक हजार योजन नीचे एक हजार योजन ऊपर छोड़ कर मध्य १२६ ० योजन की पोलार में ९ पाथड़े और १ लाख नरक के वास हैं।

चौथी पृथ्वीका १२० योजन मोटादल है। जिसम एक हजार योजन नीचे एक हजार योजन ऊपर छोड़कर मध्य ११८ ० योजन की पोलार में ७ पाथड़े और १ लाख नरक के वास हैं।

पांचवी पृथ्वी का ११८ ० योजन मोटा दल है। एक हजार योजन ऊपर एक हजार योजन नीचे छोड़कर मध्य ११६० योजन की पोलार में ५ पाथड़े और ३ लाख नरक के वास हैं।

एक पाथड़ा तीन २ हजार योजन का मोटा है।

नोट–पहली पृथ्वी क ३ भाग हैं।

१ खर (कठिन) भाग। १६ ० योजन मोटा।
२ पङ्क भाग। ८४००० ,,
३ अप्बहुल (जलबहुल) भाग। ८ ०००
एवं सर्व १८०००० योजन हुए।

पाथड़ों का अन्तर

पहली नरक के १३ पाथड़े और १२ अन्तर। एक २ अन्तर ११५५३ योजन एक भाग का है।

दूसरी के ११ पाथड़े १० अन्तर। एक एक ९७०० योजन का अन्तर है।

तीसरी ९ " ८ " । १२३७५ " " ।

चौथी " ७ " ६ " " १६१६६ ।

पांचवी ५ ४ " २५ ५० ।

छठी ३ " २ " ५२५ ।

सातवीं १ अन्तर नहीं।

अणि बंध

पहली नरक में २९९५५६७ पुष्पावकर्ण वास।
और ४४३३ पंक्ति बन्ध।

दूसरी २४९७३ ५
और २६९५ पंक्ति बन्ध।

तीसरी " " १४९८५१५
और १४८५ पंक्ति बन्ध।

चौथी " " ९९९२९३
"
और ७०७ पंक्ति बन्ध।

पांचवीं " २९९७३५
"
और २६७ पंक्ति बन्ध।

छठी ९९९३२
और ६६ पंक्ति जन्य।
सातवीं ५ 〃 ,

अवधि ज्ञान

पहली नरक के नारकीय जघन्य ३½ कोस उत्कृष्ट ४ कोस देख सकते हैं।
दूसरी ३ उत्कृष्ट ३½ कोस
तीसरी 〃 २½ ३ कोस
चौथी २ , २½
पांचवीं १½ २ कोस
देख सकते हैं।
छठी 〃 १ १½ कोस
सातवीं ½ 〃 १ कोस

जैन धर्म के मुख्य नियम

२ लोक अनादि अनन्त अकृत्रिम है। चेतन अचेतन आदि इन छः द्रव्या से भरा हुआ है।

जीव द्रव्य अनन्तानन्त भिन्न है (१) अजीव द्रव्य रूपी तथा अरूपी रूपी द्रव्य अनन्त (२) बाकी चार अरूपी-धर्मास्ति काय (३) अधर्मास्ति (४) आकाशास्ति (५) काल द्रव्य (६) एवं (७) क्रम से चलन स्थिर, अवकाश और परिवर्तन स्वभाव हैं। इन गुणों से युक्त है। विशेष विवरण नवतत्त्व में देखें।

२ परमात्मा सच्चिदानन्द अनन्तज्ञानी अरूपी जिसका ज्ञान सर्वव्यापक है अयोनि अजर अमर, निराकार निष्कलङ्क निरिच्छ निष्प्रयोजन निष्कम, सर्वज्ञ सर्वदर्शी अनन्त शक्तिमान शिव अचल अरुज अनन्त अक्षय अव्यय सिद्ध बुद्ध मुक्त इत्यादि गुणों के धारक परमात्मपद को प्राप्ति मानते हैं।

३ ससारी जीव—पाप पुण्यमय प्रवाह रूप कर्मों से शरीर से संयोग पाए हुए अनादि से भिन्न भिन्न शरीर कर्मों के धारक अशुद्ध और अनन्त हैं। चार गतियों में विभक्त हैं। हर एक ससारी जीव स्वतन्त्रता से अपने अशुद्ध योगों द्वारा कर्म बांधते है। फिर कर्मों के वश नीच गतियों में दुख

समय में ३२ शास्त्रों का प्रमाणिक माना जाता है। जो चार अं में विभक्त हैं।

१ प्रथमानुयोग — जिसमें भरत क्षत्र के ६३ महापुरु जिसमें ऋषभदेव महावीर चक्रवर्ती और रामचन्द्र रावण कृष्ण बराशिन्ध आदि के चरित्र का वर्णन है।

२ करणानुयोग —इसमें तीनों लोक (मध्य मध्य ऊर्ध्व) का नकशा है। जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि शास्त्रों में कथन है।

नाट— इसलिए जैन धर्म को महान् ऋषि चक्रवर्ती से एक दरिद्री तक ही पाल सकते हैं। विशेष १४ गुण स्थानों से पता लगता है।

३ चरणानुयोग—जिसमें त्यागी और गृहस्थों के चारित्र पालने की विधि है। आचारांग उपासक दशांग आदि शास्त्रों में वर्णन है।

४ द्रव्यानुयोग —इसमें तत्व ज्ञान अध्यात्म कथन लोक का ढांचा जीव और प्रकृति का वर्णन नवतत्व पदार्थ अनेक शंका समाधान कर्म सिद्धान्त आदि का वर्णन है। गणित ज्योतिष भगवती अनुयोग द्वार आदि शास्त्रों में वर्णन है।

८ धर्म यात्रा :—द्रव्य क्षेत्र कालानुसार मिथ्यात्व में फंसे हुए प्राणियों को इस संसार में सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र का बोध कराने के लिए उपदेश देना। जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव संवर निर्जरा बन्ध मोक्ष नवतत्व का बोध कराना

कुगुरु कुदेव कुधर्म कुशास्त्र, कुरूढ़ि आदि से हटा कर सुगुरु, सुदेव सुधर्म, सुशास्त्र, सम्यक्त्व, तप नियम संयम स्वाध्याय शुभध्यान सत्य संतोष आदि शुभ गुणों में प्रवृत्ति कराना। प्राणिमात्र से मैत्री भाव गुण प्रमुद करुणा मध्यस्थ भाव, अन्याय को छोड़ना न्याय में प्रवृत्त होना, आदि गुणों में लगाना। और साधु, साध्वी श्रावक श्राविका, चार तीर्थ रूपी संघ का परस्पर मेल करा कर धर्म प्रीति और प्रेम में वृद्धि कराना। कुसंगत त्यागना सुसंगत में प्रवृत्त होना सर्वज्ञ प्रणीत सिद्धान्त को प्राणिमात्र के कानों तक पहुंचाना। दान शील, तप भावना आदि में प्रवृत्त होने को धर्म यात्रा कहते हैं, जिसमें सात कुव्यसनों का त्यागना भी है।

९ परोपकार

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या जिनसे सेव भी करते हैं।
ऐसे परोपकारी जग के दुःख समूह को हरते हैं।

अपने स्वार्थ को त्याग कर दुखियों के हित साधन में लग जाने का नाम परोपकार है। द्रव्य क्षेत्र काल, भावानुसार अनाथों की रक्षा निराश्रितों को आश्रय देना, धन से गिरते हुओं को स्थिर करना ज्ञानदान देना बीमार, अपाहिज अतिथि स्वधर्मियों के लिए भोजन औषधि आदि का प्रबन्ध करना। इत्यादि मनुष्य समूह में कृपा का पात्र हो। उसकी तन, मन धन से सेवा करना। जिन पशुओं से मनुष्य वर्ग

का विशेष हित होता है ऐसों की रक्षा में विशेष ध्यान रक्खा जावे। और साथ ही दुःखी अपाहिज रुग्ण आदि पशुओं के लिए तन मन धन से रक्षा का प्रबन्ध करना। और जो देवी देवतों की यज्ञों या अज्ञानता से रागद्वेष की रक्षा के लिए हिंसा करते हों उनको प्रयत्न से हटाना स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों के लिए हित करना परोपकार कहलाता है।

१० मोक्ष—सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र तप यह मोक्ष मार्ग हैं। अनादि काल से प्रवाह रूप कर्मों से अशुद्ध आत्मा को शुद्ध करने के लिए सर्वज्ञ द्वारा प्रणीत शास्त्रों का सम्यग् ज्ञान और सच्ची श्रद्धा और सम्यक चारित्र की आवश्यकता है। क्योंकि ज्ञान से आत्मा तथा कर्मों का सम्बन्ध जाना जाता है। दर्शन से दृढ़ विश्वास किया जाता है। चारित्र से आते हुए कर्मों को रोका जाता है। और चौथा तप जिससे पूर्व संचित कर्मों का क्षय किया जाता है। ऐसे ज्ञान दर्शन चारित्र तथा तप द्वारा आत्मा के निर्मल होते ही अर्थात् आठ कर्मों के क्षय होते ही महाज्ञान (केवलज्ञान) प्रकट होता है।

१ ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से अनन्त अक्षय ज्ञान गुण।
२ दर्शनावरणीय „ „ दर्शन गुण।
३ अन्तराय „ आत्मिक शक्ति।
४ मोहनीय क्षायिक सम्यक्त्व।

५ नाम „ अमूर्तत्व रूप रस गन्धस्पर्श रहित तत्व निरंजन गुण युक्त।

६ गोत्र , अगुरु लघुत्व उच्चता नीचता रहिततत्व इसके भारेपन का अभाव।

७ वेदनीय अक्षयअनिराबाध सुख।

८ आयुष्य „ अचल स्थिति।

इन आठ गुणों के प्राप्त होते ही कर्म लेप से रहित निमल आत्मा अक्षय अनन्त मोक्ष में जाकर सच्चिदानन्द स्वरूप होकर ओत में ओत समा कर अनन्त सुख में लीन हो जाती है। फिर जन्म मरण रूपी बधनों में कभी नहीं आती।

श्लोक—दग्धे बीजे यथात्यन्तं प्रादुर्भवति नांकुरः।
कर्मबीज तथा दग्धे न रोहति भवांकुर" ॥

गुणस्थान

सम्पूर्ण लोक के शरीरधारी सब (अनन्त) जीव १४ जगह विभक्त हैं। अर्थात् आत्मा के गुणों का जिस २ जगह स्थान हो उन्हें गुणस्थान कहते हैं।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—अधर्म को धम समझना। धम को अधम समझना। मिथ्याविचार वाला ८४ लाख योनि मे अनन्त काल परिभ्रमण करता रहता है।

२ सास्वादन गुणस्थान—बहुत स्वल्प समय क लिए मिथ्या को मिथ्या सम को सम समझ कर फिर मिथ्या ध्यान हो जावें। वह आत्मा अर्ध पुद्गल समय तक ससार में रुल कर

एक भव उत्कृष्ट ७ तथा ८ भव में मोक्ष प्राप्त करता है।

७ अप्रमादि गु०—मद १ विषय २ कषाय ३ विकथा ४ निद्रा ५ इन पांचों प्रमादों को छोड़ता है। जघन्य उसी भव में मध्यम ३ भव उत्कृष्ट ७ तथा ८ भव में मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

८ नियट्ठ बादर गु०— अपूर्व करण शुक्लध्यान आवे। यहां दो श्रेणी करता है। उपशम (पडिवाई) क्षपक (अपडिवाई)।

९ अनियट्ठ बादर गु०—इक्कीस प्रकृतियें उपशमाता है। १५ पहिली हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगन्छा ६ एवं २१।

१० सूक्ष्म सम्पराय गु०—२७ प्रकृति उपशमता है। २७ पहली स्त्रीवेद १ पुरुष वेद २ नपुंसक वेद ३ संज्वलन का क्रोध ४ मान ५ माया ६ एवं २७।

११ उपशान्त मोहनीय गु०—यहां २८ प्रकृतियां उपशमाता है। २७ पहिली एक संज्वलन का लोभ एवं २८। यहां पर काल करे तो अनुत्तर विमान में जावे। यदि संज्वलन का लोभ उदय हो जाय तो पीछे गिर कर दसवें नवमें या पहले गुण स्थान में आ जावे।

क्षपक श्रेणी २१ प्रकृति क्षय करे तब जीव नवमें अनियट्ट बादर गुणस्थान में आता है। २७ क्षय कर तब दसवें सूक्ष्म सम्पराय गुण स्थान मे आता है।

२ गु० की स्थिति—जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ माव लिका ७ समय की।

३ गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमु हूर्त की।

४ गु० की स्थिति—जघन्य अन्तर्मु हूर्त की उत्कृष्टि साधिक ६६ सागर की। तीन भव १० देवलोक के २२-२२ सागर के अथवा ११-३३ सागर के २ भव अनुत्तर विमानों के। मनुष्य भव में अधिक।

५ गु० की स्थिति—५वें ६वें १३वें गुणस्थान की स्थिति जघन्य अन्तर्मु हूर्त की उत्कृष्टि देशन्यून पूर्व कोड़ की।

७ वें से ११ वें गुणस्थान तक की स्थिति—जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तमुं हूर्त की।

१२ वें गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुं हूर्त की।

१४ गु० की स्थिति—५ लघु अक्षर उच्चारण काल की।

क्रिया

१ ३ गु० में २४ क्रिया इरियावहि नहीं।
२ ४ गु में २३ क्रिया इरिया मिथ्या नहीं।
५ गु में २२ क्रिया अवृत्ति नहीं।
६ गु में २ आरम्भिया मायावत्तिया।
७ से १० तक १ क्रिया मायावत्तिया।
११ १२ १३ में १ क्रिया इरियावहि।
१४ वें गुणस्थान मे क्रिया नहीं।

१५ — १ गुणस्थान। (margin)

पहले से लगर ११वें गु० पर्यन्त ८ कर्म की सत्ता।
१२वें गु में ७ कर्म की सत्ता। मोहनीय नहीं।
१३वें १४ „ ४ । वेदनीय आयु नाम गोत्र।

बन्ध

१ २ ४ ५ ६ ७ गु० में आठों कर्मों का बन्ध। यदि एक कम बान्धे तो आयु कर्म टले।
३ ८ ९ गु में ७ कर्मों का बन्ध। आयु नहीं।
१० „ ६ „। आयु, मोहनीय नहीं।
११ १२ १३ „ साता वेदनीय का बन्ध।
१४ गु में कर्मों का बन्ध नहीं।

(margin) स स

❀—❀—❀

॥ इति गुणस्थान समाप्त ॥